بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

वहाबी मुल्लावों की

शोख़ियां

मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची
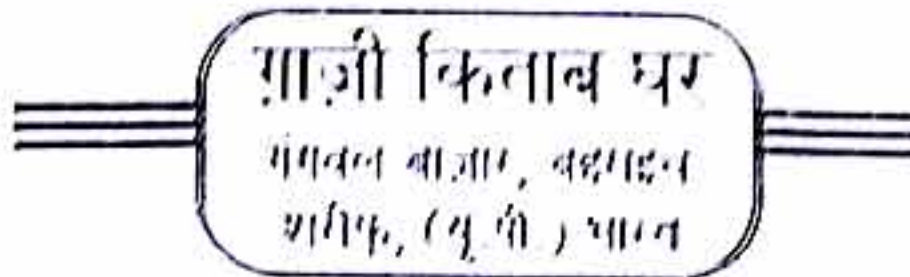
इन्तेसाब

रअसुल मुनाज़िरीन ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन शेरे बेशए अहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामह मुफ़्ती हशमत अ़ली ख़ान (رحمة الله عليه) की ज़ात सुतूदह सिफ़ात से मन्सूब करने की सआ़दत हासिल कर रहा हूँ जिन्हों ने बारगाहे रिसालत मआब (صلى الله تعالى عليه وسلم) के गुस्ताख़ व औलियाए किराम की अ़ज़मतों के मुन्किर गिरोहे वहाबियह से मुतअ़द्दिद तारीख़ी मुनाज़रे किये और हर मैदान में जफ़ाकार, सियहकार, बदअ़क़ीदह, बेहूदह अफ़राद को शिकस्ते फ़ाश दे कर फ़ना के घाट उतार दिया। तहदीसे नेमत के तौर पर फ़रमाते हैं:

सग हूँ मैं उबैदे रज़वी ग़ौसो रज़ा का
आगे से मेरे भागते हैं शेरे बबर भी

जो मुदर्रिस भी थे, मुक़र्रिर भी थे, मुफ़स्सिर भी थे, मुफ़क्किर भी थे, मुदब्बिर भी थे और एक अ़ज़ीम मुफ़्ती भी थे। जिन की तक़रीरों का ख़ास मौज़ू रद्दे वहाबियह ही रहा और उस में आप को दरके कामिल व महारते ताम्मह हासिल थी, जिस से आप की इश्क़े रसूल (صلى الله تعالى عليه وسلم) में सरशारी का बख़ूबी अन्दाज़ह होता है।

गर क़ुबूल उफ़्तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ़

ख़ाकपाए गुलामाने रज़ा------सिराजुलक़ादिरी बहराइची

मैं आईना हूं दिखाता हूं दाग़ चहरे का

माअदने फ़साहत व बलाग़त
हज़रत मुफ़्ती तौफ़ीक़ अहसन बरकाती मद्द जिल्लहुन्नूरानी

بسم الله الرحمٰن الرحيم نحمدهٗ ونصلى علىٰ رسو له الكريم

अम्मा बअद! आईनह साज़ी बहुत बड़ा फ़न है, ये हुनर बर्सों की रियाज़त के बअद हाथ आता है, लमहा लमहा एहतियात, लहज़ा लहज़ा किर्चियां बिखर जाने का ख़तरह, क़दम क़दम शिकस्तगी का ख़ौफ़, यहां बड़े कमाल बड़ी मश्शाक़ी की ज़रूरत रहती है. ऐसा इस लिए भी होता है ताकि इस आईने में दिखने वाले उकूस धुंदले और मुबहम न हों, बल्कि हर अक्स हर चेहरा बिल्कुल साफ़ मुकम्मल वाज़ेह और नुमायां नज़र आए और एक सच्चे अच्छे आईने की ख़ूसुसियत ये हुवा करती है कि वह ग़ल्तियां बहुत कम करता है बिल्कुल न के बराबर. अपने रू बरू होने वाले हर ख़द्दो ख़ाल को बिऐनिहि दिखाता है न तब्दीली करता है न उंचा दिखाता है, अच्छे चहरे को अच्छा, बुरे को बुरा, अपाहिज को अपाहिज, सलीमुल आज़ा को बिल्कुल तन्दरुस्त, भींगे को भींगा और ख़ुश चश्म को खुश चश्म, मरीज़ को पज़मुर्दह और सिहत वाले को हश्शाश बश्शाश, ख़ुबरु को खुबरु और बद शक्ल को बद शक्ल, उस का उलटा नहीं करता कि बद शक्ल को खुश शक्ल बना कर पेश करे, मुरझाए हूए को खुश व ख़ुर्रम दिखाए. अब अगर कोई बोसीदह लिबास पहन कर उस के सामने ख़ड़ा हो और आईने में कशीदह कारी करे तो कशीदह कारी के नुकूश उस के लिबास में नहीं छपने वाले, न ही फटा कटा कपड़ा आईनह रगड़ने से सिला हुवा बन सकता है, आईने के सामने आने वाला करीह चहरह बद नुमा ही नज़र आएगा, दाग़ वाला ही दिखाई देगा जब तक उस दाग़ को ख़त्म नहीं किया जाए वैसा ही रहेगा, यहां आईने को कोसना कि तुम ने ऐसा क्युं दिखाया बिल्कुल हिमाक़त व सफ़ाहत है, करीह को करीह दिखाने पर न आईने को मुजरिम ठहराया जा सकता है न आईनह साज़ को और न ही आईनह दिखाने वाले को. क्युं कि आईनह का काम सिर्फ अक्स बन्दी है और कुछ नहीं. ज़ेरे नज़र किताब भी एक आईनह है बिल्कुल

चमकता हुवा आईनह, वाज़ेह और साफ़ आईनह और आईनह साज़ का नाम है कई दर्जन किताबों के मुअल्लिफ़ व मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची, उन्हों ने आईने को एक ख़ास मक़ाम पर आवेज़ां कर दिया है और उस के सामने बे शुमार करीह, बद नुमा दाग़ दार, सरान्ड से भर पूर और गन्दे चहरों को ला खड़ा किया है, इस आईने में ज़िंदगियों को भी कड़वाहट दिख रही है, अख़लाक़ की भी, अफ़्कार की भी, किरदारों का जमगठा है, बद शक्ल चहरों की भीड़ है, बिल्कुल डरावनी, दहशत नाक, ख़ूं ख़्वार और आईने के सामने का मंज़र लहू लहू है, यह सारे किरदार बे क़रार व बे चैन हो हो कर आईने पर झपट पड़ने के लिए उतावले हो रहे हैं, आईने को तोड़ देना चाहते हैं, आईनह साज़ की कलाई मरोड़ देना चाहते हैं, उन के सामने आईनह भी मुजरिम है कि वो सच दिखा क्युं रहा है और आईनह साज़ भी क़ाबिले गरदन ज़दनी है कि उस ने ऐसा बनाया क्युं, हालांकि सच्चाइ यही है दुनिया जानती है कि आईनह और आईनह साज़ दोनों का दामन जराइम से पाक है. मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची सिर्फ़ ये नहीं चाहते जैसा कि शाइर की ख़्वाहिश है.

मैं आइनह हूं दिखाता हूं दाग़ चहरे का
जिसे ख़राब लगे सामने से हट जाए

जब कि वो चाहते हैं कि बद नुमा चहरे ख़ूश नुमा बनाये जाएं, दाग़ धब्बे धोए जाएं, अपनी ग़लती सोच और बे हंगम फ़िक्र को सहीह ज़ाविए पर रखा जाए, दुनिया की अंखों में चंद दिनों तक धूल झोंकी जा सकती है हमेशा के लिए नहीं, वरनह ऐसे आईनह साज़ हर अहेद में आईनह आवेज़ां करके असली चहरह दुनिया वालों को दिखा दें गे और दीन व फ़िक्र को बे चहरगी का शिकार नहीं बनाया जा सके गा. मुझे उम्मीद है कि इस आईने को संभाला दिया गया और बद अफ़्कार वहाबियह दयाबनह को दिखाने का काम अन्जाम दिया गया तो अवाम व ख़वास सब के लिए दूध और पानी को पहचान्ना बिल्कुल आसान होगा. अल्लाह अज़्ज़वजल हमैं इस काम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन!

फ़क़त

तौफ़ीक़ अहसन बरकाती, मुंबई

(८ नवम्बर २०१५ ई. बरोज़ इतवएार)

अपनी बात

एक हंगामए महशर हो तो उस को भूलूं
सैकड़ों बातों का रह रह के ख़याल आता है

माहे रमज़ानुल मुबारक की २६ तारीख १४३५हि. बरोज़ जुमेरात, बाद नमाज़े फ़ज्र किसी साहब ने फ़ोन किया. ऐसा लगता था कि वह सुन्नी सहीहुल अक़ीदह है मगर तरज़े तकल्लुम से ज़ाहिर था कि वह मुनाफ़िक़ है. और वहाबियत के आसेब का शिकार है. कुरआन शरीफ़ की एक आयते मुबारकह पढ़ कर उस का तर्जजमा बताता है जिस में रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) के इल्मे ग़ैब की नफ़ी है. मैं ने कहा और भी तो आयतें हैं जिन से इल्मे ग़ैब का सुबूत मिल रहा है. बरजस्ता कह दिया: कि क्या ये कुरआन की आयत नहीं है जिस में इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा की नफ़ी है. आप लोग किताबें छाप कर फ़ित्नह व फ़साद बरपा करते हैं. आप की मुजरिम और गुस्ताख़े क़लम नामी किताब के हवाले किसी किताब में नहीं मिल रहे हैं. मैने कहा आप चले आईये आप को हवाला भी मिल जाएगा और इल्मे ग़ैब का सुबूत भी. मगर उस फ़ातिरुल अक़्ल ने मुगल्लिज़ात बकना बंद न किया. मजबूरन मोबाइल बंद करना पड़ा. बाद में मालूम हुवा कि आं जनाब फ़िरक़ए अहले हदीस से तअल्लुक़ रखते हैं जो इंतहाई बदबूदार और ग़लीज़ फ़िरक़ा है, उस फ़िर्क़ा को बाज़ देवबंदी उलमा भी मुसतरद करते हैं और उनके अक़वाल व अफ़कार को बातिल क़रार देते हैं.

साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ मलबूसात में रहने वाले वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिदीन जिन का दअवा है कि उन कि अंदर कुरआन व हदीस समझने की

सलाहियत मौजूद है इसी लिये वो किसी की तक़लीद के मोहताज नहीं, और किताब व सुन्नत से मसाइल का इसतेख़्राज व इसतिंबात करने पर वह ख़ुद ही क़ादिर हैं, लेकिन मआमिला इस के बरअक्स है, ये सिर्फ़ ग़लत तरजमा और ग़लत तावीलात पर उबूर रखते हैं और अपने इल्म व तक़द्दुस की झूटी शोहरत के ज़रीआह गुमराह करते हैं, ये अपने आप को अहले हदीस कहलाते हैं जिस का मतलब उन के यहाँ ये होता है कि उन का हर अमल हदीस के मुवाफ़िक़ होता है. ये क़यास और राए से इज्तेनाब करते हैं, यही वजह है कि चारों इमाम और उन के मुत्तबईन को बुरा भला कहते हैं, खुसूसियत के साथ इमामे आ़ज़म अबू हनीफ़ा (رحمة الله عليه) और उन का इत्तेबाअ करने वालों पर लअन तअन करते हैं, उन्हें हदीस और इलमे हदीस से नावाक़िफ़ जानते हैं और इलज़ाम लगाते हूए कहते हैं कि अहनाफ़ हदीस पर क़यास को तरजीह देते हैं, सादह लोह मुसलमानों को चिकनी चपड़ी बातों से ऐसा उलझा देते हैं कि कम इल्मी व नावाक़िफ़ियत की बिना पर लोग आसानी से उन के दामे फ़रेब में आजाते हैं. मगर किसी भी फ़ित्ने के बंदे सलासिल से अक़ीदत का तूफ़ान थम नहीं सकता, तमाम साज़िशी बंधनों के बावजूद अक़ीदत व महब्बत का बहरे तलातुम, तमव्वुज आमेज़ फ़ित्ने और फ़रेब कारीयों की मज़बूत तिलिस्मी दीवार तोड़ देती है.

हज़राते मोहतरम!

इल्मे ग़ैब के सुबूत पर मुतअद्दिद किताबें अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत की एक ज़माने से मुस्तनद हवालाजात से मुज़य्यन कुतुब ख़ानों और लाएबरेरियों में मौजूद हैं, जिन से इस्तेफ़ादा किया जा सकता है. लेकिन इस किताब (**वहाबी मुल्लावों की शोख़ियां**) में आप मुलाहिज़ा करेंगे, उजले, उजले लिबास वाले ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबी, देवबंदी उलमा की वह

इबारतें जिसे पढ़ने के बाद उन के सियाह कुलूब और उन के बातिल अक़ाइद और उन हज़रात के मुबल्लिगे इल्म का अंदाज़ा होता है, अफ़सोस तो सिर्फ़ ये है कि दौरे हाज़िर के वहाबी, देवबंदी, सुलेह कुल्ली ग़ैर मुक़ल्लिदीन अपने बुजुरगों की किताबें छाप कर क़ौमे मुसलिम को गुमराही के दलदल में ढकेल रहे हैं, उस से क़ौम को क्या तअस्सुर देना चाहते हैं ये अहले दानिश जानते हैं, उन के यहां सुव्वर की तिल्ली और कव्वा खाना हलाल है, **खुद उन के मुत्तबईन क्या सुव्वर की तिल्ली और कव्वा खा रहे हैं?** अगर जवाब इस्बात में है तो खुदारा अपने ही तक महदूद रखिये और अगर जवाब नफ़ी में है तो ऐसा लिखने वालों के बारे में क्या ख़याल है? इलेक्ट्रानिक दौर है तरक़्क़ी याफ़्ता लोग हैं खुद ही फ़ैसला कर सकते हैं. अब वर्क़ पलटिये और उन बे इमानों और बे हया बेग़ैरत मुल्लावों की हया सोज़ इबारतें नंगी आंखों से मुलाहिज़ा किजिये.

(नोट): इस किताब में ज़्यादा तर अल्वहाबियत नामी किताब से मदद ली गई है जो मौलाना ज़ियाउल्लाह क़ादरी साहब की तस्नीफ़ है.

गदाए कूचए मसऊदे ग़ाज़ी

सिराजुल क़ादरी बहराइची

(बानी व मोहतमिम साबरी यतीम ख़ाना
जामिआ सरकार आला हज़रत गँगवल बाज़ार,
बहराइच शरीफ़, यूपी.)

३० सितम्बर २०१५ई.

१५ ज़िलहिज्जा शरीफ़ १४३६ही.

अल्लाह तआला के बारे में गै़र मुक़ल्लिदीन के अक़ाइद

अक़ीदह (१): दूसरा ख़ुदा हो सकता है.

(अल फ़ज़ीलतुल हिजाज़ियह, स:२१ मतबूअह अमान सरहद बर्क़ी प्रेस रावलपिंडी १९१९ई. अज़: क़ाज़ी अबदुल अहद उस्ताज़ सनाउल्लाह अमरितसरी)

अक़ीदह (२): अल्लाह तआ़ला सब से बड़ा नहीं.

(क़ौल इब्ने तैमिया दर फ़तावा हदीसियह, स.१००, मतबूअह मिस्र)

अक़ीदह (३): अल्लाह तआला की सूरत व शक्ल है. अल्लाह तआला सूरत बदल सकता है.

(हदियतुल महदी, जि.१, स.७, मतबूअह १३२५ही. इस्लामी कुतुब ख़ानह सयालकोट)

अक़ीदह (४): अल्लाह तआला अर्श पर बैठा है और दोनों क़दम कुर्सी पर रखे हैं.

(अल हदीद शरेह किताबुत तौहीद, स.११० मतबूअह सऊदी अ़रब) (अल इहतवा अला मसअलतिल इस्तवा, सिद्दीक़ हसन भोपाली मतबूअह गुलशने अवध लखनऊ. बहवाला जामिऊश शवाहिद अज़ मुहद्दिस सूरती رحمة الله عليه) (मक़ालात व फ़तावा अबदुल अ़ज़ीज़ बिन अबदुल्लाह बिन बाज़ मुफ़्तिए आज़म सऊदी अरब, स.१३१,१५७, मतबूअह, दारुस्सलाम, रियाज़ सऊदी अरब, एडीशन १९९८ई.)

अक़ीदह (५): अल्लाह तआला भी झूट बोल सकता है.

(हवाला: अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, शुमारह २७ अगस्त १९१५ई. स.२, बहवालह वहाबी मज़हब की हक़ीक़त अज़ मौलाना ज़ियाउल्लाह) ऐसा ही सियानतुल ईमान, स.१५, मतबूअह मुरादाबाद, अज़ मोलवी शहीदुलहक़ शागिर्द नज़ीर हुसैन में है.

अक़ीदह (६): अल्लाह तआ़ला मक्र व फ़रेब करता है.

(नऊज़ुबिल्लाह) (मक़ालात व फ़तावा, स.१६३,१६४)

अक़ीदह (७): अल्लाह तआ़ला मोहताज है.

(क़ौल इब्ने तैमियह दर फ़तावा हदीसियह, स.१००, अज़ इमाम इब्ने हजर मक्की)

अक़ीदह (८): आख़िरत में अल्लाह तआ़ला का दीदार नहीं होगा.

(अल फ़ज़ीलतुल हिजाज़, स.२७, बहवाला वहाबी मज़हब की हक़ीक़त)

हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) और अंबिया व औलिया वग़ैरहुम के तअल्लुक़ से ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अक़ाइद वख़यालात

अक़ीदह (९): हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) और बुज़ुरगाने दीन को वसीलह बनाना कुफ़्र व शिर्क है.

(अद दुररुस सुन्नियह, स.३९) मक़ालात व फ़तावा बिन बाज़, स.९६)

अक़ीदह (१०): शैतान हुज़ूरे अक़दस (صلی اللہ علیہ وسلم) की शक्ल में मदद करता है.

(किताबुल वसीलह, स.१४१, अज़ इब्ने तैमियह, तरजमा: एहसाने इलाही ज़हीर, मतबूअ़ह अल किताब इंटरनेशनल जामिआ़ नगर नई दिल्ली)

अक़ीदह (११): हुज़ूरे अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के रौज़ए अनवर और दूसरे अंबिया व औलिया के मज़ारात की ज़ियारत के लिये सफ़र करना मना और शिर्क में मुब्तिला होने का सब से बड़ा ज़रीअह है. (फ़तहुल मजीद शरह किताबुत तौहीद उर्दु, स.७०७, अज़ अबदुल रहमान नज्दी मतबूआ अल मिनार पब्लीकेशंज़ दिल्ली)

अक़ीदह (१२): हुज़ूरे अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) से शफ़ाअत तलब करने वाला काफ़िर व मुशरिक है.

(तोहफ़ए वहाबिया, स.६८, तर्जमा: अलहदियतुस सुन्नियाह, मोवल्लिफ़ह सुलैमान बिन सहमान नज्दी, मतबूआ अमरितसर)

अक़िदह (१३): वहाबी मोलवी क़ाज़ी मोहम्मद बिन अली शौकानी लिखते हैं: (१) हुज़ूर अकरम (صلى الله عليه وسلم) की क़ब्र मुक़द्दस हर लिहाज़ से बुत है. (हाशियह शरहुस्सुदूर, स.२५, मतबूअह सऊदियह)

अक़ीदह (१४): वहाबियों के इमाम मुहम्मद बिन अबदुल वहाब नज्दी के पोते अबदुल रहमान नज्दी ने अपने दादा की किताब किताबुत तौहीद की शरह फ़तहुल मजीद में लिखा है कि: नबी (صلى الله عليه وسلم) का रौज़ह शिर्क व इलहाद का बहुत बड़ा ज़रीअह है.

(फ़तहुल मजीद शरह किताबुत तौहीद, स.२०९, मतबूआ मिस्र)

अक़ीदह (१५): वहाबियों के नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली के बेटे नूरुल हसन भोपाली ने लिखा है: कि पैगम्बर (صلى الله عليه وسلم) कि क़ब्र को गिरा देना वाजिब है. (उर्फ़ुल जादी, स.६१)

अक़ीदह (१६): रौज़ए अनवर पर सलात व सलाम पेश करना मना है.

(हिदायतुल मुस्तफ़ीद, जि.१, स.८११. उर्दू तर्जुमह, फ़तहुल मजीद, अज़ अबदुल रहमान बिन हसन आले शेख़ मतबूआ अन्सारुस्सुन्नतुल मुहम्मदियह, फ़ज़ल मंज़िल बेडन रोड लाहोर पाकिस्तान)

अक़ीदह (१७): हुज़ूर अकरम (صلى الله عليه وسلم) का रौज़ए अनवर (गुंबदे ख़ज़रा) और हर नबी व वली के मज़ारात बाइसे फ़ित्ना और अस्बाबे शिर्क में से हैं उन को गिराना वाजिब है. (मक़ालात व फ़तावा बिन बाज़, स.१९४)

अक़ीदह (१८): हुज़ूर अक़दस (صلى الله عليه وسلم) मुरदह हैं (नऊज़ू बिललाह) उन से तअल्लुक़ रखना और मदद मांगना शिरक है.

(ऐज़ं स.१९०)

अक़ीदह (१९): हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) के माँ बाप काफ़िर और जहन्नमी हैं और उन का हुक्म कफ़िरों जैसा है.

(मक़ालात व फ़तावा, स.१७०)

अक़ीदह (२०): मीलादुन्नबी का मक़्सद अच्छा हो तो भी फ़ित्ना, बिदअ़त और शिर्क व फ़साद का सबब है. (ऐज़ं:२००)

अक़ीदह (२१): हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) की क़ब्रे अनवर के क़रीब दुआ़ मांगना बिदअ़त और गुमराही है.

(नहजुल मक़बूल फ़ार्सी, स.४३, मतबूआ रईसुल मुतावेअ १२९६ही. अज़ नवाब नूरुल हसन फ़र्ज़ंद सिद्दीक़ हसन भोपाली. फ़तहुल मजीद शरह किताबुत तौहीद अज़ अबदुल रहमान नज्दी, स.७०६, मतबूआ अल मिनार पब्ली केशंज़, दिल्ली)

अक़ीदह (२२): हुज़ूर अक़दस (صلى الله عليه وسلم) मअसूम नहीं और सहाबए केराम आप की ख़ताओं पर एअतेराज़ किया करते थे.

(तहकीकुल कलाम, स.४४, बहवालह जामेउश शवाहिद अज़ मोहद्दिस सूरती)

अक़ीदह (२३): हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) से ज़्यादा मुहब्बत रखने वाला मुशरिक है.

(तहक़ीकुल कलाम फ़ी मसअलतिल बैअति वल इलहाम. मतबूअह रियाज़ हिंद प्रेस अमरितसर, स.१५, बहवालह जामिउस शवाहिद)

अक़ीदह (२४): हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) को इल्मे गैब नहीं.

(मक़ालात व फ़तावा, स.८०)

अक़ीदह (२५): ईदे मीलादुन्नबी मनाना काफ़िरों की नक़ल और शैतानी अ़मल है.

(सुन्नी बरेलवियत क्या है? क्या ये हिंदू धरम की नक़ल है या इस्लाम, स.१३९, मतबूआ इदारह दअवतुल इस्लाम मल्लापूर पोस्ट, रठोरा ज़िलअ बरेली यूपी)

अक़ीदह (२६): अम्बिया (عليهم السلام) से दीनी अह्काम में भूल चूक हो सकती है.

(रद्दे तक़लीद ब किताबुल मजीद, स.१२, मुसद्दिक़ह नज़ीर हुसैन मतबूआ मतबअ फ़ारूक़ी दिल्ली बहवाला जामिउश शवाहिद)

नोट: क़ब्रे अनवर की ज़ियारत करने वाला शफ़ाअ़त का हकदार है.

हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ تعالی عنہما) से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा (صلی اللہ علیہ وسلم) ने फ़रमाया: मन ज़ारा क़ब्री वजबत लहू शफ़ाअती. यानी जिस ने मेरी क़ब्रे अनवर की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई. मगर ज़रा देखो! उन वहाबियों और देवबंदियों का ईमान व अक़ीदह हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की ज़ाते बा बरकात व क़ब्र शरीफ़ और रौज़ए अनवर के तअल्लुक़ से कितना गंदह और ख़राब है.

जो इन किताबों के हवाला जात के साथ बयान कर दिया गया है. अल्लाह तआला अपनी अमान मे रखे और बातिल फ़िर्क़ह से महफ़ूज़ फ़रमाए.

अक़ीदह (२७): कुरआनी तअवीज़ बांधना, अल्लाह का नाम या आयतुल कुर्सी गाड़ियों मे लटकाना, नीज़ आफ़तों व बलावों से महफ़ूज़ रखने के लिए गाड़ी के अंदर कुरआन मजीद रखना शिर्क है.

(मक़ालात व फ़तावा, स.१८०,१८। तौहीद का क़िलअ, स.७, मतबूआ दारुल क़ासिम सऊदी अरब, मुसन्निफ़ीन अबदुल रहमान साअदी, अबदुल अज़ीज़ बिन बाज़ वगैरहुमा)

अक़ीदह (२८): हलक़ए ज़िक्र व अस्तगफ़ार बिदअत है, उसे छोड़ना वाजिब है. (मक़ालात व फ़तावा, स.१८४)

अक़ीदह (२९): शबे बरात मनाना बिदअत, नाजाइज़ व हराम और शीओं की नक़ल है.

(सुन्नी बरेलवियत क्या है? स.१४१, मतबूअह इदारह दअवतुल इस्लाम मल्लापूर, रठोरा, बरेली व मख़दूम नगर अहमदाबाद)

अक़ीदह (३०): आदम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के ख़लीफ़ह न थे. (इस्लाहे अक़ाइद बहवाला अक़ाइदे वहाबियह)

नोट: क्या हो गया है इन अक़्ल के दुश्मनों को कि कुरआन मजीद के

फ़रमूदात को झुटला रहे हैं, कुरआने पाक में है कि आदम (علیہ السلام) अल्लाह तआला के ख़लीफ़ह हैं.

अक़ीदह (३१): ईसा (علیہ السلام) बग़ैर बाप के पैदा नहीं हुए उन के भी वालिद थे. (ऊयुने ज़मज़म स.२२, बहवालह अक़ाइदे वहाबिया)

कुरआने मजीद में है कि अल्लाह रब्बुल इज़्जत ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमाया.

अक़ीदह (३२): हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, हज़रत साबिर कलयरी, ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ गुलबरगह शरीफ़, औलिया अल्लाह नहीं बल्कि शैतान के वली हैं, दज्जाल और कज़्ज़ाब हैं, अहले बिदअत हैं, उन के मज़ारात इब्लीस के अड्डे हैं.

(सुन्नी बरेलवियत क्या है? अज़ अबूल इक़्बाल सलफ़ी, स.५०८, ५०९, ५१०, मुतफ़र्रिक़ मतबूअह इदारह दअवतुल इस्लाम, मल्लापूर, रठोरा, बरेली व मख़दूम नगर, अहमदाबाद)

अकीदह (३३): औलिया अल्लाह को पुकारना और उन से मदद मांगना सब से बड़ा शिर्क जली है.

(मक़ालात व फ़तावा, स.६६, मक़ालात व फ़तावा बिन बाज़, स.७९)

अक़ीदह (३४): तअज़ीम इबादत है और सालिहीन की तअज़ीम हलाकत का सबब है.

(अल जदीद शरह किताबुत तौहीद, स.१३२, १२६, मतबूआ सऊदी अरब)

अक़ीदह (३४): हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (رضی اللہ تعالٰی عنہما) कीना पर्वर थे.

(एअतिसामुस सुन्नाह, स.६९, मतबूआ कानपूर, बहवालह जामिउश शवाहिद अज़ मोहद्दिस सूरती)

अक़ीदह (३५): इमामे आज़म, इमामे मालिक, इमामे शाफ़ई, इमामे अहमद बिन हंबल के मुक़ल्लिदीन और तरीक़त के सिलसिलों

(क़ादरी, चिश्ती, नक़्शबंदी, सुहरवर्दी) में मुरीद होने वाले कफ़िर व मुशरिक और शैतान है.

(एअतिसामुस सुन्नह, स.७, अशआरुल हक़ अज़ मुहम्मद यासीन ज़फ़रुल मुबीन, मतबूआ लाहोर, स.१८९, मुसन्निफ़ मोलवी मुहय्युद्दीन, सबूतुल हक़्क़िल हक़ीक़, स.३, ४, ७, मुसन्निफ़ मोलवी नज़ीर हसन बहवाला जामिउश शवाहिद बरेलवियत क्या है? स.३५७, अज़ अबूल इक़्बाल सलफ़ी मतबूआ इदारह दअवतुल इस्लाम मल्लापूर बरेली व मख़दूम नगर अहमदाबाद (गुजरात)

अक़ीदह (३६): औलियाए केराम के रियाज़ात व मुजाहिदे और वज़ीफ़े शैतान की पूजा होती है.

(सुन्नी बरेलवियत क्या है? अज़ अबूल इक़्बाल सलफ़ी, स.३५५, मतबूआ इदारह दअवतुल इस्लाम मल्लापूर, बरेली युपी, मख़दूम नगर अहमदाबाद गुजरात)

अक़ीदह (३७): नमाज़ छोड़ना शिर्क व कुफ़्र है और बे नमाज़ी की नमाज़े जनाज़ह न पढ़ी जाए.

(तौहीद के मसाइल, स.१५६, सहीफ़ए अहले हदीस कराची शुमारह मई, १९५७ई. स.१९. अख़्बारे अहले हदीस अमरितसरी, स.५, शुमारह २, जून १९११ई. बहवाला वहाबी मज़हब की हक़ीक़त)

अक़ीदह (३८): ईसाले सवाब हिंदुवों का तरीक़ह है.

(तरजूमाने वहाबिया, स.९२, अज़ सिद्दीक़ हसन भोपाली मतबूआ मूफ़ीदे आम आगरह, बहवालह जामिउश शवाहिद)

अक़ीदह (३९): बीस रकअत तरावीह बिदअत व गुमराही है और हज़रत उमरे फ़ारूक़ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) सरीह ख़ताकार और बिदअते ज़लालत के मोजिद हैं.

(अल इंतिक़ादुर रजीह, अज़ सिद्दीक़ हसन भोपाली मतबूअ अलवी लखनऊ, स.६२, बहवालह जामिउश शवाहिद अज़ मोहद्दीस सूरती)

अक़ीदह (४०): हज़रत हुसैन (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) को इमाम कहना सहीह शीओं का तरीक़ह है. हुसैन (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) हक़ पर

नहीं थे उन्हों ने ख़लीफ़ए बरहक़ के ख़िलाफ़ ख़ुरूज व बग़ावत किया था. यज़ीद बड़ा दीनदार, परहेज़गार और ख़ैर का मुतलाशी था, यज़ीद हक़ पर था, यज़ीद को (رحمة الله عليه) कहना मुस्तहब है. यज़ीद बख़्शा बख़्शाया जन्नती है. हुसैन (رضى الله تعالى عنه) ने हुकूमत व रियासत हासिल करने के लिये मुक़ाबलह किया था. हज़रत हुसैन (رضى الله تعالى عنه) न ज़िंदगी में किसी के काम आ सके न बअदे वफ़ात किसी के काम आ सकते हैं.

(मुलहिज़न रुसूमाते मुहर्रमुल हराम अज़ हाफ़िज़ सलाहुद्दीन युसूफ़ मतबूआ मक्तबतुल फ़हीम, मऊ)

अक़ीदह (४१): ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक राम चंद्र व लछछमन और क्रिश्न वग़ैरह नबी हैं जो हिंदुवों में मशहूर हैं. इसी तरह फ़ारसियों में ज़रतश्त और चीन व जापान वालों में नफ़्सियों और बुध और यूनानियों में सक़रात और फ़ीसा गौरस.

(हदियतुल महदी, स.५८, बहवालह ग़ैर मुक़ल्लिदों के फ़रेब)

अंदुरूने ख़ाना क्या है?

जमाअते वहाबिया के मोलवी अपने आप को शफ़ीअ व मददगार समझते थे

(१) थानवी ने कहा कि मोलवी मसीहुद्दीन के वालिद को अल्लाह तआला ने इस लिए बख़्श दिया कि वह मुझ से तअल्लुक़ रखते थे.

(हवला: (१) हसनुल अज़ीज़, जि.१, हि.२, कि.१७, मलफ़ूज़१६०, **स.**१८१)

(२) थानवी ने अपनी अज़मत बयान करते हुए कहा कि मैं कानपूर था और मेरी एक मुरीदह थानह भवन में सकरात की हालत में मुझ को देखती है कि मैं ऊंटनी लाया हूं और कहता हूं कि चल, फिर वह इंतिक़ाल कर गई. ये वाकिअह बयान करने के बाद थानवी ने

कहा कि ये मेरी मक़बूलियत इन्दल्लाह की अलामत हैं उन से उम्मीद होती है कि मैं मरदूद नहीं हूं.

(हवाला: हसनुल अज़ीज़, जि.१, हि.२, क़ि.१७, मलफ़ूज़.१६०, स.१८१. (२) अशरफ़ुस सवानेह, जि.३, स.८६)

नोट: इस वाक़िअह से क़ब्ल थानवी जी अपने आप को मरदूद समझते थे.

(३): थानवी ने कहा कि कहीं लोग मेरी सूरत को सूरए यासीन न समझने लगें जो मरते वक़्त पढ़ी जाती है. (हवाला: (१) हसनुल अज़ीज़ जि.१, हि.२, क़ि.१७, मलफ़ूज़ १६०, स.१७९)

(४): थानवी के ख़लीफ़ह ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन के बहनोई ने इंतेक़ाल के बअद ख़्वाब में कहा कि अच्छा हुवा कि कानपूर जाकर मौलाना थानवी से मुरीद हो आया, मैं यहां बड़े आराम में हूं.

(हवाला:(१) अशरफ़ुस्सवानेह, जि.३, स.८६. (२)हसनुल अज़ीज़ जि.१, हि.२, कि.१७, मलफ़ूज़ १६०, स.१८०)

नोट: ये मुहँ मियां मसूर की दाल.

(५): थानवी ने कहा कि बअद नमाज़े इशा लेटा रहता हूं, तालिबे इल्म बदन दबाते हैं, तो राहत होती है, आंख लगने लगती है.

(हवाला: (१) हसनुल अज़ीज़ ,जि१, हि.३, कि.१८, मलफ़ूज़४५७, स.१५१)

ख़्वाब के ज़रीअह तौहीने नबी व उम्महातुल मोमिनीन

(१) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि मैं ने ख़्वाब मे देखा कि मआज़अल्लाह मैंने ज़ौजए मुतह्हरा के साथ हमबिस्तरी की. जवाब में थानवी ने उस को तसल्ली देते हूए लिखा कि आप किसी शेई मसअला के मोअतक़िद हैं और वह मसअला इस्तिंजा के मुतअल्लिक़ है.

(हवाला: (१) अलइफ़ाज़ातुल यौमिया देवबंद, जि.३, कि.१३, मलफ़ूज़२७१, स.२७३)

(२) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं ने हज़रते आइशा के साथ नाज़ेबा हरकत की. जवाब में थानवी ने लिखा कि आप को किसी ऐसे मसाइल में तरद्दुद है जो इस अज़्वु (अज़वुए तनासुल) के साथ मुतअल्लिक़ है. ये जवाब लिखने के बअद थानवी ने खुद अपनी तअरीफ़ करते हुए कहा कि उस शख़्स ने मेरी तश्ख़ीस पर तअज्जुब किया कि मैं ने उस का शुबह पकड़ लिया, उस शख़्स ने कहा कि मैं ढीला से इस्तिंजा सुखलाने का क़ाइल व आमिल न था.

(हवाला: (१) अल इफ़ाज़ातुल यौमिया (देवबंद) जि.३, कि.१८, मलफ़ूज़५२५, स.४९)

(३) हाजी इमदादुल्लाह ने ख़्वाब देखा कि उन की भावज मेहमानों का खाना पका रही हैं, हूज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) तशरीफ़ लाए और आप की भावज से फ़रमाया कि इमदादुल्लाह के मेहमान उलमा हैं, उन मेहमानों का खाना मैं पकाउंगा. (हवाला: (१) तज़्किरतुर रशीद, जि.१, स.४६. (२)हसनुल अज़ीज़ जि.१, हि.४, कि.१९, मलफ़ूज़५९३, स.५२, (३) सवानेह क़ासमी, जि.१, स.८४.

(४) एक सालेह ख़्वाब में हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए तो आप को उरदू में कलाम करते देख कर पूछा कि आप को ये कलाम कहां से आ गाई, आप तो अरबी हैं? फ़रमाया कि जब से उलमाए मदरसए देवबंद से हमारा तअल्लुक़ हुवा, हम को ये ज़बान आगई. (हवाला: (१) बराहीने क़ातिअह, स.३०)

(५) शाह इस्हाक़ ने ख़्वाब मे देखा कि मआज़अल्लाह हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की लाश मुबारक चौराहे पर बे कफ़न पड़ी है और लोग उस को पावं लगाते हुए चलते हैं, ये ख़्वाब देखने के बअद उन्होंने हिंदूस्तान से हिजरत कर ली. (हवाला: (१) अल इफ़ाज़ातुल यौमिया देवबंद, जि२, कि.११, मलफ़ूज़ १५, स.३९.

(६) थानवी ने ख़्वाब मे हज़रते आइशा (رضی اللہ تعالی عنہا) की तशरीफ़ आवरी का ज़िक्र कर के ये तअबीर निकाली कि मेरी नई बेगम की उम्र में और मेरी उम्र में जो तफ़ावुत है वह मिस्ल हज़रते आइशा (رضی اللہ تعالی عنہا) और हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) कि उम्र के तफ़ावुत के है. (हवाला: (१) अल इफ़ाज़ातुल यौमियह देवबंद. जि१, कि.१, मलफूज़११२, स.६०)

(७) ख़्वाब मे हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने जुमअ कि नमाज़ थानवी की इक़्तिदा में पढ़ी, थानवी ने हज़ूर की इमामत की.
(हवाला:(१) अशरफुस्सवानेह, जि.३. स.९६.)

(८) ख़्वाब में सरज़मीने मक्का के वसीअ मैदान में हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की दाएं जानिब थानवी, असहाब का कसीर मज्मअ इधर उधर, ख़्वाब देखने वाले की हुज़ूर से दरख़्वास्ते बैअत, हुज़ूर का अहदे बैअत लेना शुरूअ करना, थानवी ने हुज़ूर की मआज़अल्लाह रहबरी करते हुए कहा कि इन से ये अहेद लिजिए कि कुरसी पर न बैठें गे, थानवी के कहने के मुताबिक़ हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने कुरसी पर न बैठने का अहेद लिया.
(हवाला:(१) अशरफुस्सवानेह, जि.३, स.१०१.

उम्मते मुहम्मदियह (صلی اللہ علیہ وسلم) के बदतरीन लोग

मुंदरजह बाला इक़्तिबासात पढ़ने के बअद रूह कांप उठती है, इन्सानियत की चीख़ निकल जाती है, ज़ालिम व बे हया लोगों ने पास व अदब के सारे हद तोड़ दिए. एक मरदूद तो ख़्वाब देख रहा है कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) की लाशे मुबारकह पर ठोकर लगाता हुवा गुज़रता है (मआज़अल्लाह) नबिए अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) को ख़्वाब मे देखना हक़ीक़त का दर्जा रखता है. चूंकी आप की शक्ल में शैतान आही नहीं सकता.

एक सालेह ख़्वाब में हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की ज़ियारत करते हैं तो सरकार उरदू में कलाम करते हैं, उरदू ज़बान दानी पर सवाल होता है तो फ़रमाते हैं जब से उलमाए मदरसए देवबंद से हमारा मआमिला हुवा हम को ये ज़बान आ गई.

कोई अपने भावज के साथ मिल कर सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) से खाना पकवा रहा है और थाना भवन के मोलवी साहेब ने तो हद करदी, सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) उस के कहने के मुताबिक़ कुरसी पर न बैठने का अहद लेते हैं, उस के अलावह महबूबए सरवरे काइनात उम्मुल मूमिनीन हज़रते आइशह सिद्दीक़ह (رضی اللہ تعالٰی عنہا) की शान में किस क़द्र ईमान सोज़ और लग़्व बातें की हैं. क्या यह एक वफ़ादार उम्मती और गुलामे नबी का काम हो सकता है? हरगिज़ नहीं! ये सब माद्दी मफ़ादात के तहत काम अंजाम दिए गए हैं.

हज़रते आइशह सिद्दीक़ह (رضی اللہ تعالٰی عنہا) जिन की पाकीज़गी व तत्हीर की गवाही कुरआन दे रहा है जो सारी उम्मत की माँ हैं, जिन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब अहादीस में बयान किये गए हैं उन की ज़ात के साथ किस तरह अपनी नजिस ख़मीर और फ़ितरी नजासत का मुज़ाहिरह किया गया है. जो लोग खुद अपनी आंखों से इन वाक़िआत को पढ़ेंगे, उन्हें क़तई इतमीनान हो जाएगा और उन ज़ालिमों के कुफ़्र व शिर्क में कोई शुबह न करेंगे.

हज़रते आइशा सिद्दीक़ह (رضی اللہ تعالٰی عنہا) को ज़िंदगी भर की पुर सोज़ रिफ़ाक़त से ये क़ाबिले रश्क सिलह अता हुवा कि वह क़यामत तक के लिए आयाते कुरआनिया का उनवान बन गईं, जब जब क़ारी के सीने से तिलावते कुरआन के नग़मे उबल्ते रहें गे हज़रते आइशह सिद्दीक़ह (رضی اللہ تعالٰی عنہا) का तज़किरए जमील की खुश्बू से दुनिया मुअत्तर होती रहेगी. तक़्वियतुल ईमान, तहज़ीरुन्नास, हिफ़्ज़ुल ईमान, फ़तावा रशीदिया, बहिश्ती ज़ेवर, अल इफ़ाज़ातुल यौमिया, हसनुल अज़ीज़,

फ़तावा सत्तारिया, फ़तावा सनायिया, अवहि सलासह और उन जैसी बहुत सी किताबों की इबारतें इहानते रसूल के ज़हर से शराबोर हैं, फ़िक्री नहूसत, नफ़्स की पैरवी, ग़लत तावीलात, जहां से कुफ़्र की शराब टपकती है और शिर्क का दर्वाज़ह खुलता है और दाइमी हलाकत का नुसख़ा, अंबिया की तन्क़ीस, औलियाए किबार की शान में गुस्ताख़ियां, उम्महातुल मोमिनीन की शान में नाज़ेबा कलिमात गोया मज़कूरह किताबों में गुनाह दर गुनाह का दाएरह, जलती अज़ाब की राह और अन गिनत वसवसों कि गर्द, सैले आतिश व तूफ़ां माहौल की बे चैनी, बे चहरगी के अलमिये और कसरते आलाम में बरहना व बरहम आग के शोअले जीवन के सागर में ग़मों की भीड़, ख़यालों की नई दुनिया में ख़्वाब आवर उम्मीदें और महब्बत के जोश मारते हुरूफ़ के अंदर से निकलने वाले खुंख़्वार घने अज़ाब, अंधे ग़ारों की हबस ज़दह सोचें, भूकी जिबिल्लतें, सफ़हे हस्ती से मिटाने वाले रक़्से शरर, नफ़्स नफ़्स ज़हर और एहसास के हर जज़्बे को मसलूब कर देने वाले हुनर, इज़ारे जां का हर फ़न और महबूबे रब्बुलआलमीन जाने ईमान, शफ़ीए रोज़े शुमार, नाइबे पर्वर दिगार खुदाए लम यज़ल के राज़ दार बाइसे तख़लीक़े काइनात जनाबे मुहम्मदु र्रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) से रिश्ता मुनक़तअ करने की पूरी सलाहियत और चिराग़े शमए उलफ़त को बुझाने के लिए हर हर्बा व तरीक़ह इन किताबों में मौजूद है, अब भी अगर किसी को यक़ीन की मंज़िल न मिली हो तो इन किताबों को मंगवा कर देख सकता है.

हमारी जमाअत, जमाअते अहले सुन्नत के अकाबिरीन ने इन किताबों का ख़ूब ख़ूब तअकुब किया है और उन के सियाह चहरे को बे नक़ाब किया है. अल्लाह तआला हम सब को अपने हबीब (صلی اللہ علیہ وسلم) के सदक़े व तुफ़ैल में उन से दूर रहने की तोफ़ीक़ अता फ़रमाए.

(आमीन)

फ़िरक़ए बातिलह के अक़ाइद के चंद नमूने

और मुलाहिज़ह करें:

ग़ैर मुक़ल्लेदीन के यहां मनी नापाक है.

वुरूदे नजासत मनी आदमी दलीले नयामदह.

(बदरुल अहिल्लाह , स.१५)

यानी आदमी की मनी नापाक होने के सिलसले में कोई दलील नहीं.

मनी के तअल्लुक़ से नवाब नूरुल हसन साहब लिखते हैं:

मनी हर चंद पाक अस्त. यअनी मनी हर सूरत में पाक है.

(उरफ़ुल जादी, स.१०)

नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं:

यानी मनी पाक है ख़्वाह वह ख़ुश्क हो या तर, गाढ़ी हो या न हो.

(नज़लुल अबरार, स.४९)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां शराब को नापाक कहना बे दलील है.

नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखते है:

यअनी गधों और शराब की हुरमत से कि जिस पर कुरआन व हदीस दलालत करते हैं उन का नजिस व नापाक होना लाज़िम नहीं आता उन के नजिस होने के लिए दूसरी दलील का होना ज़रूरी है वरना उसूल मुत्तफ़िक़ अलैह पर यअनी तहारत पर बाक़ी रहेंगी.

(अर रौज़तुन्नदविय्या,१/२१)

नवाब नूरुल हसन लिखते हैं: हुकुम ब नजासत ख़ुमुर बिना बर हुर्मत बे दलील बाशद. यअनी शराब को हराम होने के बाइस नजिस कहना बे दलील है. (उरुफ़ुल जादी, स.२३७)

इस ज़िम्न में नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं:

यअनी मनी पाक है और ऐसे ही शराब भी पाक है.

(नज़लुल अबरार, जि.१, स.४९)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां कुत्ते और ख़िंज़ीर का जूठा पाक है

उस के पाक होने के तअल्लुक़ से नवाब वहीदुज्जमां लिखते हैं:

यअनी फुक़हा ने कुत्ते और ख़िंज़ीर के लुआब और उन के जूठे की तहारत व अदमे तहारत के सिलसिले में इख़्तेलाफ़ किया है, ज़्यादह राजेह बात ये है कि उन का जूठा पाक है और इसी तरह कुत्ते के पेशाब पाख़ानह के मुतअल्लिक़ इख़्तेलाफ़ किया है और हक़ बात ये है कि उन के नापाक होने पर कोई दलील नहीं. (नज़लुल अबरार, १/५०,४९)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां तमाम जानवरों का पेशाब पाक है

नवाब वहीदुज़्जमां लिखते हैं:

यअनी मनी पाक है, ऐसे ही हैज़ के ख़ून के अलावह बाक़ी ख़ून पाक है, शरम गाह की रतूबत शराब और हलाल व हराम जानवरों का पेशाब सब पाक है. (नज़लुल अबरार, जि.१, स.४९)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां मुर्दार, ख़ून और ख़िंज़ीर सब पाक है

नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ लिखते हैं:

यअनी इसी तरह आयते मैतह में मूर्दार हराम होगा नजिस नहीं. और ऐसे ही ख़िंज़ीर के नापाक होने पर लफ़्ज़े रिज्स से इस्तेदलाल करना मुनासिब नाहीं है और इसी तरह हर ख़ून के नापाक होने में कोई सहीह हदीस साबित नहीं हूई. (बदरूल अहिल्लह, स.१५, १६, १७)

इस ज़िम्न में नवाब नूरुल हसन लिखते हैं:

यअनी कुत्ते और ख़िंज़ीर के नजिसुल ऐन होने का, शराब, बहने वाले ख़ून और मुर्दार जानवर के पलीद व नापाक होने का दअवा ना तमाम है. (उर्फ़ुल जावा, स.१०)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां वुज़ू में पावं धुलने की बजाए मसह करना फ़र्ज़ है

ऊंट की कोई कल सिधी नहीं, मोलवी इब्राहीम लिखते है:

पावं धोने की बजाए मसह करना फ़र्ज़ है.

(फ़तावा इब्राहीमया, स.२१, बहवालह फ़तहुल मुबीन, स.४५२)

वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां इब्तिदाए वुज़ू में बसमलह फ़र्ज़ है.

इस बारे में मुफ़्ती अबदुस्सत्तार लिखते हैं:

अलग़र्ज़ हर मुतवज़्ज़ी को वुज़ू के शुरूअ में बिसमिल्लाह या बिसमिल्लाहि वल हम्दुलिल्लाह ज़रूर कहना चाहिए. अगर इब्तिदाए वुज़ू में भूल जाए तो इस्नाए वूज़ू में बिसमिल्लाहि अव्वलु व आख़िरु कह ले वरना वुज़ू न होगा और जिस का वुज़ू नहीं उस की नमाज़ नहीं.

(फ़तावा सत्तारियह, जि.२ स.१९)

मुंदर्जा बालह मसअलह के तअल्लुक़ से ख़ालिद गरजाखी लिखते हैं: वुज़ू करने से पहले बिसमिल्लाह पढ़ कर वुज़ू शुरूअ करना चाहिए, जो बिसमिल्लाह नहीं पढ़ता उस का वुज़ू नहीं होता.

(सलातुन्नबी, स.६८)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां बदन के किसी हिस्सा से ख़ून निकले वुज़ू नहीं टुटता

नवाब नूरुल हसन लिखते हैं: यअनी ख़ून निकलने और क़ै आने से वुज़ू नहीं टूटता. (उर्फ़ुल जादी, स.१४)

मसअला मज़कूरह के तअल्लुक़ से नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते है:

यअनी पेशाब पाख़ाना की जगह के अलावह ख़ून निकलने से वुज़ू नहीं टूटता अगर बह पड़े और वह ख़ून जो ज़ख़्मों से निकले उस से भी वुज़ू नहीं टुटता, इसी तरह ख़ालिस पीप और ख़ून आलूदह पीप से भी वुज़ू नहीं टुटता है. (नज़लुल अबरार, जि.१,स.१८)

यूनुस क़ुरैशी कहते हैं:

बदन से ख़ून निकलने से वुज़ू नहीं टूटता. (दस्तूरुल मुत्तक़ी, स.७७)

क़िब्ला रू पाख़ाना पेशाब करना बिला कराहत जाइज़ है

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक बिला कराहत जाइज़ है. मुहम्मद यूनुस कुरैशी लिखते हैं:

मगर घर में या किसी चीज़ की आड़ में जाइज़ है.

(दस्तूरुल मुत्तक़ी, स.४५)

नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं:

यअनी इसतिंजा करते वक़्त क़िब्ला की तरफ़ मुंह करना या पीठ करना मकरूह नहीं है. (नज़लुल अबरार, जि.१, स.५३)

बे वुज़ू क़ुरआन छुवा जा सकता है

इसलाम ने तो इस से मनअ किया है अलबत्ता ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़्दीक ये जाइज़ व दुरुस्त है. नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं: यअनी कहा गया कि कुरआने करीम को छूने के लिए तहारत शर्त नहीं है, इसी पर हमारे असहाब में शौकानी वग़ैरह ने जज़्म किया है.

(नज़लुल अबरार, जि.१, स.१)

मज़कूरह मसअले के तअल्लुक़ से नवाब नूरुल हसन कहते हैं

अगरचे मुहदिस रामस मुसहफ़ जाइज़ बाशद. (उर्फ़ुल जादी, स.१५)

यअनी बे वुज़ू शख़्स के लिए कुरआन को छूना जाइज़ है.

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक सेहते नमाज़ के लिए कपड़े और बदन का पाक होना शर्त नहीं

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक सेहते नमाज़ के लिए कपड़े और बदन का पाक होना शर्त नहीं है. नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ां लिखते हैं: यअनी अगर किसी ने जान बूझ कर नजासत लगे हुए कपड़े में नमाज़ पढ़ी उस ने वाजिब में ख़लल डाला अलबत्तह उस की नमाज़ सहीह है.

नीज़ लिखते हैं:

तहारत महमूल व मलबूस रा शर्त सेहते नमाज़ गरदानीद कमा यंबगी नीस्त. (बद्रु वल अहिल्लह, स.३९)

यअनी नमाज़ की सेहत के लिए कपड़े और उठाई हूई चीज़ के

पाक होने की शर्त क़रार देना मुनासिब नहीं.

मज़कूरह मसअले के मुतअल्लिक़ नवाब नूरुल हसन का क्या कहना है? वह भी जवाज़ के क़ाइल हैं. कहते हैं: या दर जामए नापाक नमाज़ गुज़ार व नमाजश सहीह अस्त. (उर्फुल जादी, स.२२)

नापाक कपड़ों में नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ सहीह है.

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक सेहते नमाज़ के लिए जगह का पाक होना शर्त नहीं

बदूरुल अहिल्लह में है: तहारते मकान वाजिब अस्त शर्ते सेहते नमाज़ नीस्त यअनी नमाज़ की जगह का पाक होना वाजिब है नमाज़ के सहीह होने के लिए शर्त नहीं है. (बदरुल अहिल्लह, स.४०)

उस के तअल्लुक़ से नवाब नूरुल हसन का क्या मौक़फ़ है?

वह भी जवाज़ व दुरुस्तगी के क़ाइल हैं. लिखते हैं: तहारते मकान नमाज़ वाजिब अस्त न शर्ते सेहते नमाज़ अस्त, नमाज़ की जगह का पाक होना वाजिब है न कि नमाज़ के सहीह होने की शर्त.

(उर्फुल जादी. स.२१)

सेहते नमाज़ के लिए सतर ढांपना शर्त नहीं.

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां औरत का सेहते नमाज़ के लिए सतर ढांपना शर्त नहीं है. नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ लिखते हैं: व अम्मा आं कि नमाज़े ज़न अगरचे तनहा या बा ज़नां या बा शौहर या दीगर महारिम बाशद बे सतर तमाम औरत नीस्त पस ग़ैर मुसल्लम अस्त.

(बदरुल अहिल्लह, स.३९)

यअनी रही यह बात कि औरत की नमाज़ अगरचेह वह तनहा हो या दूसरी औरतों के साथ हो या शौहर या दूसरे महरिमों के साथ हो तो पूरे सतर के ढांपे बग़ैर नमाज़ नहीं होती यह बात हमैं तसलीम नहीं है.

नवाब नूरुल हसन का क्या मौक़ुफ़ है?

वह भी सतर ढांपना शर्त नहीं क़रार देते हैं. व अज़ीं जा दर यफ़्ता

बाशी कि हर केह चीज़े अज़ औरतश दर नमाज़ नुमायां शुद या दर जामए नापाक नमाज़ गुज़ारद नमाज़श सहीह अस्त. यअनी यहीं से तुमहें मअलूम हो गया कि नमाज़ी के सतर का जो हिस्सह भी नमाज़ में खुल जाए या वह नापाक कपड़ों में नमाज़ पढ़ ले तो उस कि नमाज़ सहीह है. (उर्फुल जावा, स.२२)

नोटः यह है बे हया और ओबाश लोगों का मज़हब जिस पर वहाबियह फ़ख्र करते हैं.

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक नाबालिग़ की इमामत जाइज़ है

नवाब नूरुल हसन लिखते हैं: सहीह अस्त इमामते तिफ़्ल नाबालिग़ व नीस दलीले बर एअतेबारे बुलूग़. (उरफुल जावा, स.३७)

यअनी नाबालिग़ बच्चे की इमामत सहीह है और बुलुग़त के एअतेबार करने पर कोई दलील नहीं है.

यूनुस कुरैशी का मज़हब है

जवान और बड़ी उम्र वाले लोगों के होते हूए नाबालिग़ लड़का इमाम बने तो जाइज़ है बशर्तेकि सब से अच्छा कुरआन पढ़ता हो.

(दस्तूरूल मुत्तक़ी, स.१२७)

क्या राफ़्ज़ी, ख़ार्जी, मोअतज़ली और मिरज़ाई के पीछे नमाज़ जाइज़ है?

इस्लाम ने तो इस से शिद्दत से मनअ किया है और नमाज़ के न होने का क़ौल किया है, जब कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहां खुली छूट है और वह नमाज़ के जवाज़ के क़ाइल है.

नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते है:

यअनी राफ़्ज़ी, ख़ार्जी, मोअतज़ली और मुक़ल्लिद की इमामत जाइज़ है. एक दूसरे मौकेअ पे लिखते हैं: मुतर्जिम कहता है: कि अहले हदीस ने ख़वारिज और रवाफ़िज़ वग़ैरह अहले क़िब्ला की तकफ़ीर नहीं

की और इस लिए उन के पीछे नमाज़ में इक़्तिदा सहीह रखी.

(नज़्लुल अबरार, जि.१, स.९३, नूरुल हदीस, किताब दाल, स.८१.)

सवाल: मज़कूरह फ़िर्क़ों की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने के तअल्लुक़ से सनाउल्लाह क्या कहते हैं?

जवाब: बअज़ लोगों को वहम होता है कि चूंकि मिर्ज़ाई वग़ैरह फ़िर्क़ों के एअतेक़ादात इस हद तक पहुंच चुके हैं कि उन को कुफ़्र लाज़िम है बल्कि उलमा ने उन पर कुफ़्र का भी फ़तवा दिया है इस लिए उन की तो अपनी नमाज़ जाइज़ नहीं फिर उन के पीछे हमारी नमाज़ क्युं कर होगी. दर अस्ल यही एक सवाल है जिस ने मुसलमानों को इस हद तक पहुंचाया है कि वह एक दूसरे के साथ मिल कर ख़ुदा के हुज़ूर में खड़े नहीं हो सकते इसी तरह बअज़ लोग मेरे इस फ़तवे से (मिरज़ाईयों के पीछे नमाज़ जाइज़ है) ये समझते हैं कि मिरज़ायियों के पीछे जब नमाज़ हो गई तो उन के फ़तावाए कुफ़्र में भी तख़्फ़ीफ़ आ जाएगी. इस लिए उन की ख़िदमत में अर्ज़ करता हूं कि जवाज़ इक़्तिदा से न मैं उन के एअतेक़ाद का मुसह्हे हूं न उन के फ़तवे में तख़फ़ीफ़ होती है. मैं अरकाने सलात में इमाम और मुक़्तदी का रब्त मानता हूं मगर क़ुबूलियत और अदमे क़ुबूलियत में उन दोनों का कोई तअल्लुक़ नहीं समझता, इस लिए जो शख़्स नमाज़ को फ़र्ज़ जान कर अरकाने नमाज़ अदा करता है उस के पीछे इक़्तेदा करना मैं जाइज़ जानता हूं, गो एअतेक़ादी फ़ुतूर की वजह से इमाम की नमाज़ क़बूल न हो तो हम मुक़्तदी की क़बूल हो जाएगी.

(अख़्बारे अहले हदीस मोरख़ा ९, सफ़र १४३६ह बहवाला फ़तावा उलमाए हदीस, जि.२, स.१८९)

मौसूफ़ एक दूसरे मक़ाम पर लिखते हैं: मेरा मज़हब और अमल है कि हर कलेमह गो के पीछे इक़्तेदा जाइज़ है वह शीआ हो या मिरज़ाई.

(अख़्बारे अहले हदीस, १२/ एप्रेल १९१५ई. बहवाला फ़तावा इमाम रब्बानी, स.५०)

नोट: वाह वाह! मारे घुटना फूटे सर क्या, मसअला है और क्या फ़तवा दिया जा रहा है यह सिर्फ़ इस लिए है कि जैसे छोटे मियां वैसे ही बड़े मियां दोनों नजिस, ज़ाहिर सी बात है ऐसी सूरत में मुख़ालिफ़त कर ही नहीं सकते.

सवाल: वह कौनसा फ़िर्क़ा है जिस के नज़्दीक अगर इमाम हालते जनाबत में नमाज़ पढ़ा दे तो सिर्फ़ इमाम की नमाज़ फ़ासिद होगी, मुक़्तदियों को लौटाने की ज़रूरत नहीं?

जवाब: मलऊने ज़माना फ़िर्क़ए ग़ैर मुक़ल्लिदीन.

नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते है:

यअनी जब इमाम का बे वुज़ू होना ज़ाहिर हो जाए या मुक़्तदी की राए में इमाम की तरफ़ से नमाज़ फ़ासिद करने वाली कोई चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो सिर्फ़ इमाम अपनी नमाज़ लौटाए मुक़्तदी न लौटाए और इमाम पर लाज़िम नहीं है कि वह मुक़्तदियों को बताए कि बग़ैर वुज़ू के या जनाबत की हालत में उस ने नमाज़ पढ़ादी है.

(नज़्लुल अबरार, ज.१, स.१०१)

सवाल: बअज़ लोग कहते हैं ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़्दीक नमाज़ के दौरान कुरआन हाथ में ले कर पढ़ना और वर्क़ पलटना जाएज़ है, क्या उन का यह कहना दुरुस्त है?

जवाब: उन का कहना दुरुस्त है. ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़्दिक नमाज़ के दौरान कुरआन हाथ में ले कर पढ़ने और वर्क़ पलटने में कुछ हर्ज नहीं है. नवाब वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं:

यअनी दौराने नमाज़ कुरआने करीम देख कर पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है अगरचे कुरआने पाक एक या दोनों हाथों से उठा रखा हो और सफ़्हात बदलता रहे, ख़्वाह फ़राइज़ हों या नवाफ़िल.

(नज़्लुल अबरार, जि.१, स.११०)

मज़ीद लिखते हैं:

यअनी ऐसे ही इमाम का नमाज़ में कुरआन देख कर तिलावत करना भी मकरूह नहीं है और अपनी उंगली से सफ़हात बदलना भी मकरूह नहीं है. (नज़लुल अबरार, जि.१, स.१३१)

नमाज़ में बात चीत से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती है

हमारे फुक़हाए इस्लाम के नज़्दीक तो फ़ासिद हो जाती है अलबत्ता ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़्दीक फ़ासिद नहीं होती है. नवाब नूरुल हसन लिखते हैं यअनी भूल कर बात चीत करने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती है. (उर्फ़ुल जावा, स.२३)

यूनुस कुरैशी लिखते हैं:

इमाम और मुक़्तदी अगर नमाज़ में भूल की बाबत कुछ गुफ़्तगू कर लें तो भी नमाज़ में कुछ नुक़्सान वाक़ेअ नहीं होता.

(दस्तुरुल मुत्तक़ी, स.१२३)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के शेख़ुल हदीस इस्माईल सलफ़ी लिखते है:

अगर नमाज़ में भूल हो जाए और नमाज़ में उस की इत्तिलाअ न हो सके, नमाज़ ख़त्म होने के बअद मअलूम हो कि कोई ग़ल्ती हुई उस के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ के तौर पर जो गुफ़्तगू हो नमाज़ में उस से कोई हर्ज वाक़ेअ नहीं होता नमाज़ की तक्मील के बअद सजदए सहव कर लिया जाए जिस तरह जुल यदैन की हदीस से ज़ाहिर है.

(रसूले अकरम की नमाज़, स.१०३)

सवाल: वह कौन सा मज़हब है जिस के नज़दीक जान बूझ कर नमाज़ न पढ़ी तो उस की क़ज़ा नहीं सिर्फ़ तोबह व इस्तेगफ़ार काफ़ी है?

जवाब: मज़हबे ग़ैर मुक़ल्लिदीन यूनुस देहलवी लिखते हैं: अगर कोई दीदह व दानिस्तह नमाज़ें छोड़ दे और फिर उन की क़ज़ा करना चाहे तो उस क़िस्म की नमाज़ों की क़ज़ा हदीस से साबित नहीं है बलकि ऐसे आदमी के लिए तोबह व इस्तेगफ़ार काफ़ी है.

(दस्तुरुल मुत्तक़ी, स.१४९)

हाफ़िज़ अबदुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं:

बुलूग़ के बअद अगर नमाज़ें थोड़ी हों जो आसानी से अदा की जा सकती हों तो अदा करली जाएं अगर ज़्यादह मुद्दत की हों जिन को अदा करना मुश्किल हो तो यही काफ़ी है.

(फ़तावा अहले हदीस, जि.१, स.४१५)

इस्माईल सलफ़ी तर्के सलात की मुतअद्दिद सूरतें बना कर लिखते हैं: पहली सूरत में किसी उज़्र के बग़ैर सहल अंगारी से नमाज़ तर्क हूई अमदन तर्क में शामिल है इस लिए कोई क़ज़ा नहीं, ये चीज़ मन तरकस्सलाता मुतअम्मिदन. में शामिल है इस का तोबह नसूह के अलावा और कोई इलाज नहीं. (रसूले अकरम की नमाज़, स.११५)

(माखुज़ अज़ माहनामह अल जामिआह रौनाही, अक्तूबर/नवम्बर २०१४)

देवबंदीयों की नमाज़ और रोज़ह

(१) एक मरतबह रमज़ान के महीनह में रशीद अहमद गंगोही तरावीह पढ़ा रहे थे, मुक़्तदियों में निस्फ़ से कम अर्बी समझने वाले थे जब गंगोही ने वह आयात तिलावत की जिस में ख़ौफ़ और वहशत दिलाया गया है तो मुक़्तदियों की यह हालत थी कि कोई ख़ौफ़ ज़दह, कोई लरज़ह, कोई बे क़रार, कोई थरथर कांपता है तो कोई रोता है. उस के बअद गंगोही ने वह रुकूअ तिलावत किया जिस में रहमते ख़ुदावंदी का ज़िक्र था, उस वक़्त दफ़अतन तमाम जमाअत पर सर्दी तारी हो गई और पहली हालत यक लख़्त मुन्क़लिब हो गई, फ़रहत व इंबिसात के साथ यहां तक कि बअज़ मुक़्तदी हंसी ज़ब्त न कर सके और क़हक़हा जारी हो गया.

(हवाला तज़किरतूर रशीद जि.२,स.१९८)

(२) थानवी का एअतेराफ़ कि मैं तो दरी की जा नमाज़ के ख़ाने नमाज़ की हालत में गिना करता हूं..

(हवालह हसनुल अज़ीज़ जि.१, हि.२, कि.१७, मलफूज़ २७१, स.२५६)

(३) बअज़ औक़ात देखा गया कि थानवी ने उचकन की जेब में रंगीन रोश्नाई से लिखा हुवा ख़त रख लिया फिर नमाज़ के अंदर याद आया कि जेब में रंगीन रोश्नाई से लिखा हुवा ख़त है तो थानवी दौराने नमाज़ जेब में से उस को निकाल कर फेंक देता था.

(हवालह अशरफुस्सवानेह जि.२/१३२)

(४) थानवी का कहना है कि अगर कोई नमाज़ के वक़्त मेरे क़रीब भी बैठ जाता है और मुझ को मअलूम भी हो जाता है कि यह मेरा मुन्तज़िर है तो इस क़दर तबीअत पर बोझ होता है कि नमाज़ भी आई गई हो जाती है.

(हवालह अल इफ़ाज़ातुल यौमियह (देवबंद) जि.२, कि.११, मलफूज़ १३०/स.१०४)

(५) एक मरतबह थानवी की बड़ी बेगम छत से गिरी, उस वक़्त थानवी ख़ानेक़ाहे इम्दादिया में फ़ज्र की सुन्नतें पढ़ रहे थे और दौराने नमाज़ थानवी को इत्तेलाअ हूई कि बेगम गिर गई है, थानवी ने फ़ौरन नमाज़ तोड़ दी और घर जाकर बेगम की तीमार दारी की.

(हवालह अशरफुस्सवानेह जि.३, स.१०७)

(६) थानवी ने कहा कि मेरे फ़ारसी के उस्ताज़ मोलवी मन्फ़ेअत अली एक मरतबह नमाज़ के क़अदह में सो गए और दीवाने हाफ़िज़ के शेअर पढ़ने लगे, गालिबन ख़्वाब में किसी शागिर्द को पढ़ाते होंगे.

(हवाला कलिमतुल हक़, क़िस्त हश्तुम, मलफूज़ ३००/स.१५४)

(७) थानवी ने ख़ुद अपना एक वाक़िअह बचपन की शरारत के तअल्लुक़ से बयान किया जो हस्बे ज़ेल है:

एक वाक़िअह हिफ़्ज़े कलामे मजीद के बअद का याद आया, एक नाबीना हाफ़िज़ थे जिन को कलामे मजीद बहुत पुख़्तह याद था और उस का उन को नाज़ भी था, उन को हज़रते वाला क़ब्ले बुलुग़ नवाफ़िल में कलामे मजीद सुनाया करते थे. एक रमज़ान

शरीफ़ में दिन को उन से कलामे मजीद का दौर कर रहे थे हज़रते वाला ने दौर के वक़्त उन को मुतनब्बह कर दिया कि हाफ़िज़ जी मैं आज तुम को धोका दूंगा और ये भी बताए देता हूं कि फ़लां आयत में धोका दूंगा. हाफ़िज़ जी ने कहा कि मियां जावो भई! तुम मुझे क्या धोका दे सकते हो, बड़े बड़े हाफ़िज़ तो मुझे धोका दे ही न सके. हज़रते वाला जब सुनाने खड़े हूए और इस आयत पर पहूंचे "إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ" तो बहुत तरतील के साथ पढ़ा जैसा कि रुकूअ करने के क़रीब हज़रते वाला का मअमूल है. उस के बअद उस से आगे जब "اَللّٰهُ يَعْلَمُ الخ" पढने लगे तो लफ़्ज़े "اللّٰه" को इस तरह बढ़ा कर पढ़ा कि जैसे रकूअ में जारहे हों और तक्बीर यअनी अल्लाहु अक्बर कहने वाले हों. हाफ़िज़ जी ये समझ कर कि रुकूअ मे जा रहे हैं फ़ौरन रकूअ में चले गए, उधर हज़रते वाला ने आगे क़िरअत शुरूअ करदी "يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ الخ" अब इधर हाफ़िज़ जी तो रुकूअ में पहूंचे और इधर क़िरअत शरूअ हो गई, फ़ौरन ही हाफ़िज़ जी सीधे खड़े हुए इस पर हज़रते वाला को बे इख़्तियार हंसी आ गई और क़हक़हा मार कर हंस पड़े और हंसी से इस क़दर मग़लूब हुए कि नमाज़ तोड़ कर अलग हो गए. (हवालाह: (१) अशरफुस्सवानेह, जि.१, स.२०.)

(८) मोलवी फ़ख्र निज़ामी ने फ़र्ज़ रोज़ह की हालत में बुढ़िया का दिया हुवा शरबत पी लिया और कहा कि दिल तोड़ने से रोज़ह तोड़ना आसान था. मोलवी फ़ख़र निज़ामी के इस फ़ेअल का दिफ़ाअ करते हूए थानवी ने बहवालह हाजी इम्दादुल्लाह ने कहा कि फ़र्ज़ रोज़ह तोड़ना तो किसी के दिल शिकनी के ख़याल से जाइज़ नहीं, मगर मग़लूबुल हाल थे उस वक़्त उन पर क़ल्ब की हक़ीक़त मुंकशिफ़ हो गई और सौम की हालत मुंकशिफ़ नहीं थी.

(हवाला: (१) हसनुल अज़ीज़ जि.१, हि.३, कि.१८, मलफूज़४२९, स.५४)

(९) एक दिन मोलवी क़ासिम नानोतवी छत्तह की मस्जिद के इहाते में होले भुने खा रहे थे, दारुल ऊलूम देवबंद के मोहतमिम मोलवी रफ़ीऊद्दीन से नानोतवी ने कहा आईए मौलाना खाईए, मोलवी रफ़ीउद्दीन ने कहा कि हज़रत मेरा तो रोज़ह है. थोड़ी देर के बअद मोलवी नानोतवी ने फिर कहा तो मोलवी रफ़ीऊद्दीन फ़ौरन बिला तअम्मुल खाने बैठ गए हालांकि अस्र की नमाज़ हो चुकी थी और अफ़्तार का वक़्त भी क़रीब था.

(हवालाह (१) हिकायाते औलिया, हिकायत नं.३७३, स.३४२)

(१०) थानवी के मामूं ने ऐन हालते नमाज़ में अपने पीर को जवाब देना और हज़रत इब्ने अबी कअब के वाक़िअह का तज़्किरह करके "استجيبوا لله وللرسول" वाली आयत को अपने पीर के लिए फ़िट करना.

(११) थानवी ने एक वाकिअह बयान किया कि एक दिन मैं किताब पढ़ने में मशगूल था जिस की वजह से अस्र की अज़ान सुनाई न दी इस बिना पर अस्र की नमाज़ का वक़्त भी निकल गया. मग़रिब के वक़्त अपने गुमान में अस्र की नमाज़ समझ कर मस्जिद में गया तो अज़ान होते ही फ़ौरन जमाअत खड़ी हो गई, मुझ को तअज्जुब हुवा कि अज़ान में और जमाअत में कुछ भी तवक्कुफ़ न किया, आख़िर जब इमाम ने जेहर किया (बलंद आवाज़ से पढ़ा) तब मअलूम हुवा कि मग़रिब का वक़्त है. (हवालह: (१) अल इफ़ाज़ातुल यौमियह (देवबंद) जि.३, कि.१४, मलफूज़ ६८१, स.४२९)

बस देख ली तेरी नमाज़

मुंदर्जा बाला बयानात और नमाज़ों का तज़्किरह वहाबी धर्म के बुज़ुरगों का है जिन के यहां नमाज़ में अगर नबी का ख़याल आ जाए तो मआज़अल्लाह नमाज़ फ़ासिद हो जाती है उस के बर अक्स अगर बीवी से मुजामिअत और ज़िना का तसव्वुर या ख़याले गाव ख़र आजाए तो नमाज़

मुकम्मल हो जाती है और उस की दलील में अकाबिरीने देवबंद अमली तौर पर पूरे उतर रहे हैं. थानवी के उस्ताज़ नमाज़ के क़अदह में दीवाने हाफ़िज़ का शेअर पढ़ते हैं, मौलाना रशीद अहमद गंगोही तरावीह की नमाज़ में क़हक़हा लगाते हैं. थानवी जी जा नमाज़ के ख़ाने गिनते हैं और बीवी के गिरने की इत्तेलाअ पर नमाज़ तोड़ देते है, नाबीना हाफ़िज़ साहब को महेज़ धोकह देने के लिए लफ़्ज़े अल्लाह को बढ़ा कर कहते हैं. मोलवी फ़ख़र निज़ामी रोज़ह की हालत में बुढ़या की दी हूई शर्बत ग़ट ग़ट पी जाते हैं. मोलवी रफ़ीउद्दीन क़ासिम नानोतवी के हुक्म से बिला तअम्मुल खाने के लिए बैठ जाते हैं और रोज़ह तोड़ देते हैं हालांकि अस्र की नमाज़ हो चुकी थी अफ़्तार का वक़्त क़रीब था, थानवी जी के मामुं ऐन हालते नमाज़ में अपने पीर को जवाब देते हैं. यह वह हालात हैं जो देवबंदी हज़रात करामतों के तौर पर बयान करते हैं. नमाज़ किस क़दर अहम्मुल फ़राइज़ में दाख़िल है उसे बयान करने कि ज़रूरत नहीं लेकिन उन ज़ालिमों ने नमाज़ रोज़ह को फ़िस्क़ व फ़जूर और लह्व व लइब से तअबीर किया, ज़रूर तअज्जुब ख़ेज़ है. जब कि देवबंद का एक सिरा ख़ालिस नमाज़ रोज़ह ही की तबलीग़ करने में अपनी सारी तवानाई ख़र्च कर रहा है. बुजुर्गों की नमाज़ें, उन का खुशूअ व खुजुअ बयान किया जाता है ताकि क़ौम वैसे ही नमाज़ें अदा करे जैसे बुज़ुर्गों ने पढ़ी हैं, मगर यह ज़ालिम ऐसी नमाज़ें सिखाते हैं जो यक़ीनन बरोज़े हश्र मुंह पर मारी जएं गी.

ख़ुदा ऐसे नमाज़ी और उन के जैसी नमाज़ से महफ़ूज़ रखे. (आमीन)

सवाल: मीलाद शरीफ़ के मौक़अ पर बयान किया जाता है कि किसरा के महल के कंगुरे गिर गए, सारे बुत सर निगूं हो गए, सारे खुश्क दर्या जारी हो गए, एक चमक दार रोशनी निकली जिस की चमक से शाम के महल्लात नज़र आने लगे, क्या यह सब रिवायतें सहीह

है ?

जवाब: अहले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक सारी रिवायतें सही हैं और तारीख़ की मोअतबर व मोअतमद किताबों में साबित हैं, अलबत्ता वहाबियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों के हाफ़िज़ मुहम्मद जूना गढ़ी लिखते हैं कि किसरा के महल का वाक़िआ बे असल है. बुतों का सर निगूं हो जाना, दर्या का ख़ुश्क हो जाना, दर्या का जारी हो जाना, रोशनी का देखना सब झूटे हैं और किसी दज्जाल के गढ़े हुए हैं.

(अख़्बारे मुहम्मदी दिल्ली, स. ३.१५. १९४० ई.)

हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी (رضی اللہ تعالی عنہ) मुसल्लम बुजुर्ग हैं, उन्हों ने अपनी किताब मदारिजुन्नुबुव्वह में लिखा है और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (رحمۃ اللہ علیہ) तो कितने बड़े आशिक़े रसूल हैं कि आलमे बेदारी में ७६ मर्तबा रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) का दीदार किया. उन्हों ने अपनी किताब ख़साइसे कुबरा में लिखा है कि मीलाद शरीफ़ के वक़्त अजीब व ग़रीब वाक़िआत रो नुमा हुए. अगर ये वाक़िआत झूटे और दज्जाल के गढ़े हूए हैं तो ये अल्लाह वाले लोग अपनी किताबों में उन वाक़िआत को हरगिज़ नहीं लिखते. अब उन वहाबियों के नज़्दीक वह कौन लोग हैं जो झूटे और दज्जाल हैं. जिन्होंने इन वाक़िआत को गढ़ा और झूटा बयान किया है, इन नूरानी वाक़िआत को बयान करने वाले बरेली शरीफ़ के रहने वाले नहीं थे बल्कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब (رضی اللہ تعالی عنہ) थे. हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) की फूफी हज़रते सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब (رضی اللہ تعالی عنہا) थीं. हमारे प्यारे नबी (صلی اللہ علیہ وسلم) की प्यारी माँ हज़रते आमिनह तय्यबह (رضی اللہ تعالی عنہا) ने खुद बहूत से वाक़िआत बयान फ़रमाए जो विलादत के वक़्त ज़हूर पज़ीर हूए. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ تعالی عنہما) ने बयान किया और बहुत से अइम्मह व मुहद्दिसीन और औलियाए इज़ाम ने

इन वाक़िआत को बयान फ़रमाया और अपनी किताबों में लिखा भी, मगर वहाबी और देवबंदी को रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) से बुग़्ज़ व इनाद है इस लिए मीलाद शरीफ़ को कनहय्या का जनम कहता है और मीलाद शरीफ़ के नूरानी वाक़िआत को झूटा और दज्जाल के गढ़े हूए बताता है.

वहाबियों के नज़्दीक महफ़िले मीलाद हर हाल में नाजाइज़ व हराम है

वहाबियों, देवबंदियों और तबलीग़ियों के पीर व मुर्शिद मोलवी रशीद अहमद गंगोंही लिखते हैं कि:

(१) मजलिसे मीलाद हर हाल में ना जाइज़ व हराम है.

(फ़तावा रशीदिया, ज: २, स.८३)

मशहूर देवबंदी मोलवी ख़लील अहमद अंबेठवी लिखते हैं कि:

(२) रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) की मीलाद (क्रिश्न) कनहय्या के जन्म की तरह है.

(बराहीने क़ातिआ, स.१४८, मतबूआ देवबंद)

अहले हदीस कहलाने वालों के मुहद्दिस नज़ीर हुसैन देहलवी के शार्गिद मोलवी अबू यहया मुहम्मद शाह जहांपूरी लिखते हैं कि:

(३) मजलिसे मीलाद शरीफ़, क़याम वग़ैरह बिदअत व शिर्क है.

(अल इरशाद इला सबीलिर्रशाद , स.४८)

अहले हदीस कहलाने वालों के हाफ़िज़ जूनागढ़ी लिखते हैं कि:

(४) मीलादे मुहम्मदी के वाक़िआत जो बयान किए जाते हैं सरासर झूटे हैं और किसी दज्जाल के गढ़े हूए हैं.

(अख़्बारे मुहम्मदी, दिल्ली, स.३,१५ जनवरी १९४०)

हज़रात! वहाबियों के पीर व मुर्शिद मोलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा आप हज़रात को मअलूम हो गया है कि महबूबे खुदा, हमारे मुश्फ़िक़ व महेरबान नबी (صلی اللہ علیہ وسلم) की मीलाद शरीफ़

हर हाल मे नाजाइज़ व हराम है मगर यही वहाबियों के पीर मोलवी रशीद अहमद गंगोंही का फ़तवा है कि बच्चों का जन्म दिन, सालगिरह मनाना जाइज़ व दुरुस्त है. मुलाहिज़ा किजिए:

(५) बच्चों की सालगिरह मनाना और उस की ख़ुशी में खाना खिलाना जाइज़ व दुरुस्त है. (फ़तावा रशीदिया, जि.१, स.७४)

नोट: **वहाबियों, देवबंदियों के ईमान के साथ, साथ अक़्ल भी बरबाद हो चुकी है कि बच्चों का जनम दिन मनाना जाइज़ और महबूबे खुदा (صلی اللہ علیہ وسلم) की पैदाइश व मीलाद मनाना नाजाइज़ व हराम.**

ख़ुदा जब दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है

ऐ ईमान वालो! मुनाफ़िक़ों गुस्ताख़ों ने मीलादे पाक के बारे में किस क़दर दरीदह दहनी और बे अदबी का मुज़ाहिरह किया है कि इस क़दर बे बाक और निडर तो यहूद व नसारा और मुश्रिकीन भी नहीं हैं. लिहाज़ा इन बे अदबों को पहचानिये और उन से दूर रहिए और अपने ईमान की हिफ़ाज़ंत किजिए और यक़ीन रखिए कि हमारे प्यारे आक़ा मुश्फ़िक़ व महेरबान नबी (صلی اللہ علیہ وسلم) की मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र करना, नाजाइज़ व हराम, बिदअत व शिर्क नहीं. बल्कि कुरआन व सुन्नत और सहाबए केराम व बुजुर्गाने दीन के अक़्वाल व अहवाल से ज़ाहिर और साबित है कि ज़िक्रे मीलादे पाक कारे ख़ैर और मुबारक व महबूब अमल है.

मीलाद शरीफ़ का बयान सुन्नते मुस्तफ़ा है

हज़रते अब्बास (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) फ़रमाते है कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) को ख़बर मिली कि आप के ख़ान्दान को किसी ने बुरा भला कहा है.

हदीस शरीफ़ (१): तो नबिए करीम (صلى الله عليه وسلم) मेम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मैं कौन हु? तो सहाबए केराम ने अर्ज़ किया कि आप अल्लाह के रसूल हैं. हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया मैं अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं अल्लाह तआला ने मख़लूक़ पैदा की उन में सब से बेहतर मुझे बनाया फिर मख़लूक़ के दो गिरोह किए, उन में मुझे बेहतर बनाया फिर उन के क़बीले किए और मुझे बेहतर क़बीलह में बनाया फिर उन के घराने बनाए, मुझे उन में बेहतर बनाया.

तरजुमा: तो मैं उन सब में अपनी ज़ात के एअतेबार और घराने के एअतेबार से बेहतर हूं. (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात, स.५१३)

हदीस शरीफ़: (२) हज़रते अबू क़तादह (رضى الله تعالى عنه) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) से पीर के दिन रोज़ह रखने के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया कि मैं उसी दिन पैदा हुवा और उसी रोज़ मुझ पर कुरआन नाज़िल हुवा.

(मुसलिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स.१७९)

हदीस शरीफ़: (३)यअनी मैं उस वक़्त भी नबी था जब आदम (عليه السلام) रूह और जिस्म के दरमियान थे. और मैं तुमहें अपने इब्तेदा की ख़बर देता हूं, मैं दुआए इब्राहीम का नतीजह हूं और मैं बशारते ईसा हूं और मैं अपनी वालिदह का ख़्वाब हूं जो मेरी वालिदह ने मेरी विलादत के वक़्त देखा था.

तरजुमा: और वालिदह माजिदह से मेरी विलादत के वक़्त ऐसा नूर ज़ाहिर हुवा था जिस कि रोश्नी से मुल्के शाम के महल्लात रोशन हो गए थे. (मुसनद इमाम अहमद, जि.४, श.१२७, दलाइलुन्नुबुव्वह, जि.१, स.८३, मिश्कात, स.५०५)

नोट: इन अहादीसे करीमह से साबित हुवा कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने अपनी मीलाद का ज़िक्र फ़रमाया और अहादीस शरीफ़

में सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) ने अपनी विलादत के वक़्त रु नुमा होने वाले वाक़िआत और ज़ाहिर होने वाले नूर का तज़किरह भी फ़रमादिया. तो साफ़ तौर पर पता चला कि महफ़िले मीलाद को कनहय्या के जनम दिन की तरह कहने वाला काफ़िर व मुर्तद है और मीलाद शरीफ़ के नूरानी वाक़िआत को झूटा साबित करना और दज्जाल का गढ़ा हुवा कहना अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहु व (صلی اللہ علیہ وسلم) को झूटा और दज्जाल कहना हुवा और इस तरह की बात बद बख़्त मुनाफ़िक़ और मुर्तद जहन्नमी ही कह सकता है.

अब आप गुज़िश्तह से पेवस्तह इबारत सवाल व जवाब के अंदाज़ में वाज़ेह तौर पर मुलाहिज़ह करें ताकि पढ़ने के बअद ज़हन चौकन्ना हो कर देर तक अपने पास महफ़ूज़ रख सके.

सवाल: क्या कुत्ता ख़िंज़ीर और सांप हलाल हैं?

जवाब: जी हां! अकाबिरीने देवबंद के नज़्दीक हलाल हैं.

(नीलुल औतार, स.२७, ज:१ मतबूआ मिस्र, ख़ज़ाइनुल अदविया, जि.५, स:३८५, ३८६)

सवाल: क्या काफ़िर का ज़बीहा हलाल है?

जवाब: काफ़िर का ज़बीहा इस्लाम में हलाल तो नहीं है अलबत्ता अकाबेरीने देवबंद के नज़्दीक हलाल है.

(नज़लुल अब्ररार, जि.३, स.७८, उर्फुल जावा, स.२३९)

सवाल: बिज्जू खाना कैसा है?

जवाब: वहाबिया के इमाम नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली के लड़के नूरुल हसन ने अपनी किताब उर्फुल जादी में बिज्जू खाना मुबाह लिखा है. (उर्फुल जादी, स.२४३, फ़िक़हे मुहम्मदिया पंजुम, स.१२३)

नोट: वहाबी मुफ़्ती अब्दुस्सत्तार ने न खाने वाले को मुनाफ़िक़ व बे दीन लिखा है. (फ़तावा सत्तारिया दुव्वम, स.२१)

सवाल: गोह का खाना हलाल है या हराम?

जावाब: वहाबिया के यहां हलाल है. (तफ़्सीरे सत्तारी, स.४२६, फ़िक़्हे मुहम्मदी, जि.५, स.१२३, फ़तावा सनाइया, जि.२, स.१७२, मतबूआ, मुंबई)

याद रहे कि हदीस शरीफ़ में है : नहा अन अक्लिज़्ज़ब्बि. हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने गोह का गोश्त खाने से मनअ फ़रमाया है. सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) तो मनअ फ़रमाऐं मगर वहाबिया उसे जाइज़ व हलाल बताएं. अल अ़याज़ु बिल्लाह. उन के लिए यही कहा जा सकता है.

(मिश्कात, स.३६१, अबूदाऊद दुव्वम, स.१७६)

मक़्सूद है कि माहे रुख़ों का विसाल हो
मज़हब वह चाहिए कि ज़िना भी हलाल हो

सवाल: इंदलवहाबिया गोरख़ुर (जंगली गधा) का क्या हुक्म है?

जवाब: हलाल है. (फ़िक़्हे मुहम्मदियह, जि.५, स.१२३)

सवाल: कछुवा, केकरा, घोंगा हलाल है या हराम?

जवाब: वहाबियों के इस्लाम में सब हलाल है.

(फ़तावा सनाइया, जि.१, स.५५७, मतबूआ मुंबई, फ़तावा सनाइया, जि.१ स.५९८, मतबूआ मुंबई)

नोट: वहाबी बुज़ुर्गों ने अपने मुत्तबईन के लिए हराम जानवरों को हलाल बता कर लज़ीज़ ग़िज़ावों का इंतेज़ाम कर रखा है, ख़ास कर तबलीग़ी जमाअत वालों के लिए सस्ती और उम्दह ग़िज़ा ताकि महंगाई के बोझ से महफ़ूज़ रह सकें. ऐ वहाबियो! तुमहें मुबारक हो गोह, बिज्जू, कव्वा, कुत्ता, ख़िंज़ीर और कछुवा, हमें तो ग़ौसे आज़म (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) का मुर्ग़ा ही चाहिए.

सवाल: मनी की पाकी और नापाकी के तअल्लुक़ से अकाबेरीने वहाबिया क्या कहते हैं?

जवाब: अकाबरीने वहाबिया मनी की पाकी के क़ाइल हैं.

(बदूरुल अहिल्लह, स.१५, अरौज़तुन्नदविय्यह, जि.१, स.१३)

सवाल: अकाबरीने वहाबियह के यहां क्या औरत की शर्मगाह की रतूबत

भी पाक है?

जवाब:हां! (फ़िक़्हे मुहम्मदियह कलाँ, स:४१)

सवाल:क्या इंदलवहाबिया मनी का खाना जाइज़ है?

जवाब:जी हां! बअज़ वहाबिया के नज़्दीक मनी का खाना जाइज़ है. वहाबियों के मोलवी मुहम्मद अबूल हसन ने लिखा है कि मर्द व औरत दोनों की मनी पाक है और जब मनी पाक है तो उस का खाना भी जाइज़ है या नहीं, इस में दो क़ौल हैं. (इस से मअलूम होता है कि बअज़ वहाबियों के यहां मनी का खाना जाइज़ है)

(फ़िक़्हे मुहम्मदियह कलां, जि.१ स.४१)

सवाल: किस का फ़तवा है कि ज़ानियां का माल हलाल है?

जवाब: हाफिज़ अब्दुल्लाह ग़ाज़ी पूरी और इमामुल वहाबिया सनाउल्लाह अमरितसरी का. (अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.९, २७ अगस्त १९१५ई. फ़तावा सनाइया, जि.२, स.१८९, मतबूआ मुंबई)

नोट: जब ज़ानिया और कंजरियह का माल हलाल व तय्यब है तो उन का पेशा भी जाइज़ होगा, जब कि हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने कंजरी की उजरत हराम क़रार दी है. मिश्कात शरीफ़ में है: नहा अन समनिलकल्बि व महरिल बग़िय्यि व हल्वानिल काहिनि. (हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) ने कुत्ते की क़ीमत, रेंडी (कंजरी) की उजरत और काहिन की शीरीनी से मनअ फ़रमाया है.

सवाल: किस का फ़तवा है कि सूद ख़ोर की इक़्तेदा में नमाज़ जाइज़ है?

जवाब:मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी का. सूद ख़ोर के तअल्लुक़ से कहते हैं: ऐसे शख़्स को इमाम न बनाना चाहिए लेकिन अगर नमाज़ पढ़ा रहा हो तो उस के पीछे इक़्तेदा दुरुस्त है.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१०,११, १८ जून १९१५इ.)

सवाल: मसलके वहाबियत में ग़ैर मुसलिमों के चंदे और सदक़े का क्या हुक्म है?

जवाब: बिला कराहत जाइज़ है. (अख़्बारे अहले हदीस, अमरितसर, स.१२, ७ नवम्बर १९११३इ.)

सवाल: हिंदूवों की सूदी रुपये से लगाई गई पियाऊ से पानी पीना कैसा है?

जवाब: मोलवी रशीद अहमद गंगोही कहते हैं कि इस पयाऊ से पानी पीने में मुज़ाइक़ह नहीं है. (फ़तावा रशीदियह, स.४९८, मतबूअह क्राची)

सवाल:अकाबेरीने देवबंद में से किस का क़ौल है कि अगर कुंवें में कुत्ता गिर जाए तो पानी नापाक नहीं होता

जवाब:वहाबियों के मियां नज़ीर हुसैन देहलवी का. फ़तावा नज़ीरियह, (जि.१, स.२००, मतबूअह दिल्ली)

सवाल:मोलवी वहीदुज़्ज़मां ग़ैर मुक़ल्लिद कुत्ते के पेशाब के तअल्लुक़ से क्या कहते हैं?

जवाब:वह उसे नजिस नहीं ठहराते हैं. (हदियतुल मह्दी, जि.३, स.७८)

सवाल:ख़िंज़ीर और कुत्ते का जूठा पाक है या नापाक?

जवाब:मोलवी वहीदुज़्ज़मां ग़ैर मुक़ल्लिद कहते हैं: कुत्ते और ख़िंज़ीर के सिवा तमाम जानवरों का जूठा जमहूर के नज़्दीक नापाक है मगर हमारे अहले हदीस हज़रात का उन से इख़्तेलाफ़ है, उन के नज़्दीक पाक है. वल हक़्क़ू अदमुन्नजासति. और हक़ यह है कि ख़िंज़ीर और कुत्ते का जूठा नापाक नहीं है. (हदियतुल मह्दी, जि.३, स.३७)

सवाल: क्या कुत्ते का गोश्त, हड्डियां, ख़ून, बाल और पसीनह भी पाक है.

जवाब:जी हां! मसलके वहाबियत के पैरूकारों के नज़्दीक यह भी पाक है. (बदरुल अहिल्लह, स.१६, उर्फुल जादी, स.१०)

सवाल: ख़ून, ख़िंज़ीर और शराब के तअल्लुक़ से नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली क्या कहते हैं?

जवाब: यह सब पाक हैं. (बदरुल अहिल्लह, स.३३३, उर्फुल जादी, स.२३८)

सवाल: किस का फ़तवा है कि दर्याई ज़िंदह और मुरदह जानवर सब

हलाल हैं?

जवाब: नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली का. (बदरुल अहिल्लह, स.३३[illegible], उर्फ़ुल जादी, स.२३८)

नोट: वहाबियों की पसंदीदह ग़िज़ाएं कव्वा, बिज्जू, कछुवा, कुत्ता, ख़िंज़ीर और मनी वग़ैरह हैं. हक़ीक़त में पर्वरदिगारे आलम ने इन बे ईमानों को सज़ा दी है कि मुतबर्रक खाने, शीरीनी वग़ैरह जिन पर फ़ातिहा ख़्वानी हो उन्हें मयस्सर न हो, क्युं कि वहाबियों ने ऐसे खाने को शिर्क क़रार दिया है जिस पर कुरआन शरीफ़, कलेमह शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ पढा गया हो.

सवाल: वहाबियों के वह कौन से पेशवा हैं जो पाख़ानह करते वक़्त क़िब्ला की तरफ़ मुंह और पीठ करने को जाइज़ बताते हैं?

जवाब: मोलवी मुहम्मद अबूल हसन. (फ़िक़हे मुहम्मदियह, स.१०,११ सलातुन्नबी, स.१२, इम्दादुल फ़तावा, जि.१, स.३)

सवाल: किस का कहना है कि जिमाअ के वक़्त क़िब्ला की तरफ़ मुँह करना जाइज़ है?

जवाब: वहाबियों के मोलवी मुहम्मद अबूल हसन का. (फ़िक़हे मुहम्मदियह, स.११)

सवाल: फ़तावा सत्तारियह की वह कौन सी इबारत है जिस में क़िब्ला की तरफ़ पावं करके सोने की इजाज़त दी गई है?

जवाब: लेटने वाले की निय्यत अगर तौहीने कअबा न हो तो दुरुस्त है, अगर हो तो ना दुरुस्त है. (फ़तावा सत्तारियह, जि.२, स.१३०)

सवाल: मुतअ की हुरमत मुतअद्दिद अहादीस से साबित है, वहाबियों के वह कौन से इमाम हैं जो अहादीसे नबविया को नज़र अंदाज़ करते हुए मुतअ को जाइज़ व दुरुस्त बताते हैं?

जवाब: इमामुल वहाबियह मोलवी वहीदुज़्ज़मां हैदराबादी. (अख़बारे मुहम्मदी देहली, स.१५, यकुम जनवरी, १९४१इ. नज़लुल अब्रार, जि.२, स.३३)

सवाल:क्या मुश्त ज़नी जाइज़ है?

जवाब:इसलाम में तो ह़राम, ह़राम, अशद ह़राम है. लेकिन वहाबियह के बअज़ मोलवियों ने उसे जाइज़ ही नहीं बलकि वाजिब क़रार दिया ह. वहाबियों के मोलवी नवाब नूरुल हसन भोपाली लिखते हैं: हासिले कलाम यह है कि मुश्त ज़नी या किसी सख़्त चीज़ से रगड़ कर मनी निकालना कुव्वते शहवानी के वक़्त मुबाह है, ख़ास कर जब फ़ाइल को गुनाह में मुबतेला होने का ख़तरा हो क्युं कि उस की निगाह ने उस को मजबूर करदिया हो तो उस वक़्त मुबाह़ बलकि वाजिब भी हो जाता है. (उर्फ़ुल जादी, स.२०७)

मोलवी वहीदुज़्ज़मां हैदराबादी ने भी लिखा है कि बअज़ हज़रात ने मुश्त ज़नी जाइज़ क़रार दिया है और जो नबी करीम (صلی اللہ علیہ وسلم) से इस पर वईद व तहदीद मर्वी है उसे ज़ईफ़ क़रार दिया है. (नज़लुल अब्रार)

सवाल:चूतड़ों ओर रानों में वती को ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबियह के कौन से मोलवी जाइज़ क़रार देते हैं?

जवाब:मोलवी नवाब सिद्दीक़ ह़सन भोपाली. (बदरुल अहिल्लह, स.१७५)

नोट: भोपाली साहब एक ग़ैर फ़ितरी अमल को जाइज़ बता रहे हैं जब कि यह क़ौमे लूत (علیہ السلام) का ख़बीस अमल था और इस फ़ेअले क़बीह के फ़ाइल व मफ़ऊल के लिए शरीअत ने सख़्त सज़ा मुतअय्यिन की है.

सवाल:इस्लाम तो ज़िना से मनअ करता है और हुक्म देता है कि ज़िना के क़रीब भी मत जाओ. मोलवी अबुल हसन भोपाली की वह कौन सी इबारत है जिस से ज़िना की इजाज़त मिलती है?

जवाब:जो शख़्स ज़िना पर मजबूर किया जाए उस को ज़िना करना जाइज़ है, उस पर हद वाजिब नहीं क्युं कि अहकामाते शरईयह इख़्तियार से मुक़य्यद हैं. (उर्फ़ुल जादी, स.२१५)

सवाल: मोलवी वहीदुज़्ज़मां की वह कौन सी इबारत है जिस से अपनी मां, बहेन और बेटी से भी ज़िना करने की इजाज़त मिलती है?

जवाब:व लव दख़ला बिल मुहर्रमति फ़लहा महरुल मिस्लि. अगर किसी शख़्स ने महरिमात (मां, बहेन, बेटी वग़ैरह) से ज़िना किया तो उस को हक़्के महरे मिस्ल अदा करना पड़ेगा. (नज़्लुल अब्रार, जि २, स.३२)

नोट: जो अमल इस्लाम में हराम, सख़्त हराम है उस पर आं जनाब फ़तवा दे रहे हैं कि महरे मिस्ल अदा करना पड़ेगा.

सवाल:शरीअते मुतहहरह का मशहूर व मअरूफ़ मसअलह है कि अगर कोई बाप अपने बेटे की बीवी से ज़िना करे तो बीवी अपने शौहर पर हमेशह के लिए हराम हो जाए गी, लेकिन मसलके वहाबियत के वह कौन से मोलवी हैं जिन का मसलक शरीअते मुतहहरह के इस मसअले के ख़िलाफ़ है?

जवाब:मोलवी वहीदुज्जमां लिखते हैं: व कज़ालिका लव जामआ ज़व्जतब्निहि ला तुहर्रमु अलब्निहि. इसी तरह अगर किसी शख़्स ने अपने बेटे की बीवी से जिमाअ किया तो उस के बेटे पर औरत हराम नहीं होगी. (नज़लुल अब्रार फ़ी फ़िक़्हिन्नबिय्यिल मुख़्तार, दुव्वम, स.२८)

सवाल:मोलवी वहीदुज़्जमां की वह कौन सी बेहूदह इबारत है जिस से सास के साथ ज़िना की इजाज़त समझी जाती है?

जवाब:व कज़ालिका लव जामअ उम्मम रअतिहि ला तुहर्रमु अलैहीम रअतुहु.

इसी तरह अगर किसी शख़्स ने अपनी सास से जिमाअ किया तो उस पर उस की औरत हराम नहीं होती.

(नज़लुल अब्रार, दुव्वम, स.२८)

सवाल:वह कौन सा बेहूदा मोलवी है जो अपनी लड़की के साथ निकाह के जवाज़ का क़ाइल है?

जवाब: नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली का लड़का नवाब नूरुल हसन.

तरजुमह: जो बेटी उस की मां से ज़िना करने से पैदा हूई उस बेटी के साथ निकाह करने की ममानिअत की कोई वजह नहीं है, इस लिए कि महरिमात का ज़ी महरम के लिए हराम होना शरई है, शरई बेटी की हुर्मत आई है और यह शरई बेटी नहीं है कि हुक्मे इलाही. व बनातुकुम. के मातहत आए और हम यह नहीं कह सकते कि बेटी का नाम उस के मख़लूक़ह पानी से लाहिक़ है, अगर उस को शरई से तशरीह की जाए तो ग़लत है और अगर उस को ग़ैर शरई कहा जाए तो हमारे ख़िलाफ़ नहीं है, अगरचे वह लड़की उसी के नुत्फ़े से पैदा हुई है लेकिन यह नुत्फ़ा नुत्फ़ा नहीं है कि उस तरफ़ से निसबत साबित हुई बलकि वह ऐसा नुत्फ़ा है कि सिवाए पथ्थर के कुछ हासिल नहीं हुवा. (उर्फुल जादी, श;११३)

सवाल: मसलके वहाबियत में बाप बेटे की मुशतरकह औरत का क्या हुक्म है?

जवाब: वह बाप बेटे में से हर एक के लिए जाइज़ है. नज़लुल अब्रार में है:

फ़लव ज़ना बइम्रअतिं तहिल्लु लहू उम्मुहा व बिन्तुहा व कज़ालिका लव ज़ना इब्नुहू बिइमरअतिं तहिल्लु लिअबीहि व कज़ालिका लव ज़ना अबूहु बिइम रअतिं फ़तहिल्लु लिइब्निहि ख़िलाफ़न लिलजुमहूरी.

अगर किसी ने किसी औरत से ज़िना किया तो उस औरत की मां और बेटी उस ज़ानी के लिए हलाल है और इसी तरह अगर किसी के बेटे ने एक औरत के साथ ज़िना किया तो वही औरत बाप के लिए भी हलाल है और इसी तरह अगर उस के बाप ने किसी औरत से ज़िना किया तो वही औरत बेटे के लिए भी हलाल है. यह मसलके जमहूर के ख़िलाफ़ है. (नुजुलुल अब्रार, दुव्वम, स.२१)

सवाल: सौतेली मां से निकाह का क्या हुक्म है?

जवाब:इसलाम में तो ना जाइज़ है अल बत्तह मसलके वहाबियत में जाइज़ है. इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने सौतेली मां से निकाह के तअल्लुक़ से पूछे गए सवाल में कहा: मेरे नाक़िस इल्म में उस की हुर्मत की दलील नहीं मिलती. (अख़्बारे अहले हदीस अमरितसरी, स.१२, १४एप्रिल १९१२इ.)

सवाल:सगी नानी और दादी से निकाह जाइज़ है?

जवाब:मौलाना सनाऊल्लाह अमरितसरी ने दादी और नानी के साथ निकाह करने को मुबाह और जाइज़ करदिया.

(किताबुत्तौहीद वस्सुन्नह, स.२७३)

सवाल:भांजे की पोती से निकाह जाइज़ है?

जवाब:सरदारे अहले हदीस अमरितसरी से किसी ने सवाल किया, ज़ैद अपने सौतेले भांजे की पोती से निकाह करना चाहता है. आया यह निकाह शरअन जाइज़ है या कि हराम. तो जवाब दिया: कुरआन और हदीस और फ़िक़ह में जिन महरिमात का ज़िक्र है उन पर शामिल नहीं लिहाज़ा जाइज़ है.

(अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, मुहर्रम १३३०हि.)

नोट: मुंदर्जा बाला इबारतों को ख़ूब ग़ौर से पढ़िए और फ़ैसला किजिए कि यह लोग किस क़दर बे बाक और निडर हैं, बजाए डांट डपट करने के गुनाहे कबीरह की दअवत दे रहे हैं.

सवाल:क्या औरत को दाढ़ी वाले को दूध पिलाने की इजाज़त है?

जवाब:जी हां! इंदल वहाबियह जाइज़ है. मुजतहिदुल वहाबियह नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखते हैं: औरत को देखना जाइज़ क़रार देने के लिए औरत का बड़े आदमी को दूध पिलाना जाइज़ है.

(अन्नहजुल मक़बूल मिन शराइइर्रसूल, स.५४)

नवाब के लड़के नूरुल हसन ने भी अपने बाप की तक़लीद करते हुए लिखा है ग़ैर औरत का बड़े आदमी को दूध पिलाना जाइज़ है

अगरचे दाढ़ी वाला हो ताकि उस औरत का देखना जाइज़ हो जाए. (नज़लुल अब्रार फ़ी फ़िक्हिन्नबिय्यिल मुख़तार, स.७७, ज:२)

सवाल: इसलाम ने जो पर्दे का हुक्म दिया है, मोलवी नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली इस हुक्म के तअल्लुक़ से क्या कहते हैं?

जवाब: परदह वाली आयत ख़ास नबीए पाक (صلی اللّٰہ علیہ وسلم) की अज़्वाजे मुतहहरात के बारे में वारिद हुई, उम्मत की दूसरी औरतों के वास्ते नहीं है. (बुन्यानुल मर्सूस, स.१६८)

सवाल: क्या परदे में बैठ कर औरत को खेल दिखाना जाइज़ है?

जवाब: जी हां! अकाबेरीने देवबंद के यहां पर्दे में बैठ कर औरत को खेल दिखाना जाइज़ है. वहाबियों के मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी लिखते हैं: पर्दे में बैठ कर औरत को खेल मिस्ल गंकह बाज़ी वग़ैरह दिखाना जाइज़ है, अपनी औरत से खेल कूद करना भी जाइज़ है. (हिदायतुज़्ज़ौजैन, स.७)

सवाल: क्या इसलाम में हैज़ की कोई मुद्दत नहीं है?

जवाब: इसलाम में तो है, अलबत्तह मसलके वहाबियत में कोई मुद्दत नहीं है. वहाबियों के मुज्तहिद क़ाज़ी शौकानी ने लिखा है: हैज़ की कम और ज़्यादह दिनों की कोई मुद्दत नहीं. (अद्दुर्रुल बहिय्यह, स.६, हदियतुल मह्दी, जि.३, स.५०, अहले हदीस अमरितसर, स.१३, १९ एप्रेल १९३७ इ.)

सवाल: हैज़ के ख़ून के कितने रंग हैं?

जवाब: इसलाम ने छ रंग बताए हैं. अलबत्तह मसलके वहाबियत में एक ही रंग है और वह सियाह है. (हदियतुल मह्दी, जि.३, स.५२)

सवाल: वह कौन से मोलवी साहब हैं जिन्होंने हिनदूस्तानी औरतों को हूर क़रार दिया है?

जवाब: मसलके वहाबियत के इमाम मोलवी अशरफ़ अली थानवी जिन्हें जमाअते वहाबियह हकीमुल उम्मत कहती है. (अल इफ़ाज़ातुल यौमियह, जि.४, स.२३७)

सवाल:किस इमाम ने रुख़्सारों और पेशानी पर बालों के फूल बनाने और मग़रबी फ़ैशन की इजाज़त दी है?

जवाब:इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने.

(अहले हदीस अमरितसर, स.१३, २६ जून १९३६इ.)

सवाल:किस मोलवी ने इसलामी हुक्म की पामाली और ना क़द्री करते हुए बयक वक़्त चार से ज़ाइद औरतों को रखने की इजाज़त दी है?

जवाब:मसलके वहाबियत के मोलवी नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली ने.

(उर्फुल जादी, स.११५)

नोट: वाह भोपाली साहब! कुरआन मजीद तो साफ़ साफ़ बयक वक़्त सिर्फ़ चार औरतों के निकाह में रखने की रुख़सत दे रहा है मगर आप ने अपनी शैतानी चाल और इबलीसी इज्तेहाद से अपने पैरूकारों को ज़िना में मुब्तेला करने के लिए अजीब फ़तवा दे दिया और कुरआन व हदीस की सरीह मुख़ालीफ़त कर डाली. ....शर्म तुम को मगर नहीं आती

सवाल: मसलके वहाबियत के वह कौन से पेशवा हें जो बिला उज़्रे शरई अज़्ल को जाइज़ लिखते हैं?

जवाब:मोलवी अबूल हसन, लिखते हैं: औरत के साथ अज़्ल करना जाइज़ है. (यअनी इंज़ाल के वक़्त औरत से अलग होजाना) ख़्वाह उज़्रे शरई हो या न हो. (फ़िक़्हे मुहम्मदियह कलां दुव्वम, स.१०६)

सवाल: क्या बग़ैर उज़्र के बर्थ कंट्रोल जाइज़ है?

जवाब: मसलके वहाबियह में जाइज़ है. एक सवाल के जवाब में लिखते हैं कि अगर मिंया बीवी दोनों की रज़ा मंदी हो तो जाइज़ है.

(सहीफ़ह अहले हदीस, क्राची, स.२१, २६ जनवरी १९९५इ.)

नोट: वहाबियत बड़ा अजीब मसलक है कि उस में हर चीज़ की रुख़सत मिल जाती है जिस से इसलाम सख़्ती से मनअ करता

है. अब इसी मसअले को ले लीजिए शरीअते मुतह्हरह में बिला उज़्रे शरई अ़ज़्ल की सख़्ती के साथ ममानिअत है कि उस में अय्याशी ही अय्याशी है. मुसलिम शरीफ़ की हदीसे पाक है कि सहाबए केराम (رضی اللہ تعالٰی عنہم) ने सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) से अज़्ल के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया: ज़ालिकल वादुल ख़फ़िय्यू. अ़ज़्ल करना दर अस्ल पोशीदह तौर पर ज़िंदह दरगोर करना है.

सवाल: क्या लड़कियों का घर में गाना जाइज़ है?

जवाब: वहाबियों के सर्दार मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने फ़तवा दिया है कि लड़कियों का गाना घर में या ईद या शादी के मौक़अ पर जाइज़ है उस को राग से कोई तअल्लुक़ नहीं.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१२, १६ एप्रेल १९१५इ.)

सवाल: क्या शादी में गाना बजाना जाइज़ है?

जवाब: मसलके वहाबियत में जाइज़ व रवा है.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१०, ५ जनवरी १९१२इ)

सवाल: क्या शादी में ढोलक बजाना जाइज़ है?

जवाब: इंदल वहाबियह ज़ाइज़ है. कहते हैं कि शादी में वलीमह की दअवत हो और किसी एक तरफ़ ढोलक वग़ैरह बजती है तो खाना खाते हैं क्युं कि शादी में इतने की इजाज़त आई है.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१२, १४ जनवरी १९१६इ.)

नोट: यही वहाबियह सुन्नी मुसलमानों को बदनाम करते हैं कि सुन्नियों के यहां गाना बजाना होता है मगर अल हम्दुलिल्लाह जमाअते अहले सुन्नत के यहां क़तअन जवाज़ का फ़तवा नहीं है, हां! वहाबी, देवबंदी मुल्लाओं ने जाइज़ बताया है. अगर हराम व बिदअत और शिर्क है तो सिर्फ़ मीलाद की महफ़िल मुनअक़िद करना, खड़े हो कर सलाम पढ़ना, किसी हलाल चीज़ पर फ़ातिहा पढ़ना.

-----आवाज़ दो इन्साफ़ को इन्साफ़ कहां है

सवाल:क्या बाइस्कोप देखने की रुख़्सत है?

जवाब:इमामुल वहाबियह सनाउल्लाह अमरितसरी से किसी ने मसअलह पूछा था. वह सवाल मअ जवाब दर्ज किया जाता है. मुलाहिज़ह फ़रमाएं.

सवाल: दो शख़्स झगड़ते हैं कि बाइस्सकोप, नाटक जो निकला है. इस बारे में एक कहता है कि अजाइब ग़राइब दिखलाता है. देखना जाइज़ है. दूसरा कहता है कि अल्लाह की कुदरतें और ऐसी अजाइब व ग़राइब नज़र आरही हैं नाटक का कमाल उस से फ़ज़ूं नहीं. उस में अंगरेज़ी बाजा बजाते हैं. ऐसे महल में जाना तमाशा देखना मुबलिग़ दे कर गुनाह मोल लेना है.

जवाब:इस क़िस्म के उमूर निय्यत पर मौक़ूफ़ हैं. हदीस शरीफ़ में आया है. इन्नमल आमालु बिन्निय्यात किसी मशहूर मक़ाम का नक़्शा देखना हो या कोई और अजाइबात देखने की ज़रूरत हो तो जाइज़ है. गरज़ जैसी निय्यत वैसा बदलह.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१०, ५, जनवरी १९१२इ)

सवाल: क्या शतरंज खेलना जाइज़ है?

जवाब: शरीअते मुहम्मदियह में तो नाजाइज़ है, अलबत्तह शरीअते वहाबियह में जाइज़ व दुरुस्त है.

(हदियतुल मह्दी अमरितसर, स.११, १८ जून १९३७इ)

सवाल:क्या ताक़ रातों मे वअज़ व तक़रीर का रिवाज बिदअत है?

जवाब:मसलके वहाबियत में बिदअत है.

(हफ़्त रोज़ह अल एअतेसाम लाहोर, स.३, १७ सितम्बर १९७६ई)

सवाल:क्या सलातुत तस्बीह में कोई फ़ज़ीलत नहीं है?

जवाब:मसलके अहले सुन्नत व जमाअत में इस नमाज़ की बे पनाह फ़ज़ीलत है, अल बत्तह मसलके वहाबियत में कोई फ़ज़ीलत नहीं

है. चुनांचे इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी फ़तवा देते हैं कि उस की फ़ज़ीलत के मुतअल्लिक़ कोई सहीह हदीस नहीं आई. (अख़बारे अहले हदीस, स.७, २७, जून १९४३इ)

नोट: यह वहाबियह अबूल कज़्ज़ाब शैतान लईन की रविश पर चल कर मुसलमानों को ज़िक्र व तसबीह से रोकना चाहते हैं जब कि मिशकातुल मसाबीह में हज़रते इब्ने अब्बास (رضی اللہ تعالی عنہ) से हदीसे पाक मर्वी है.

कहते हैं कि यह सब बअद की पैदावार हैं, सहाबह व ताबईन के दौर में उन का वजूद नहीं था. इन वहाबियह दयाबनह से मैं पूछता हूं, कि तुम खुद भी सहाबह व ताबईन के ज़माने में नहीं थे, न तुम्हारी मां थी और न ही तुम्हारे बाप, तो अपने फ़तवा के अईने में तू ख़ुद बिदअती व गुमराह के अलावह हरामी भी है और तुम्हारे हरामी होने की दलील क़ुरआने करीम की अयतें दे रही हैं.

सवाल: किस मसलक के मोलवी ने ज़ेवरात पर अदमे ज़कात का क़ौल क्या है?

जवाब: मसलके वहाबियत के मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने.

(बदरुल अहिल्लह, स.१६, अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१०, १२, जून १९०८इ)

सवाल: शौहर अपनी बीवी को ज़कात दे सकता है. इस का कौन क़ाइल है?

जवाब: इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी. (ऐज़ं)

सवाल: क्या मां बाप को ज़कात देना जाइज़ है?

जवाब: मोलवी सनाउल्लह अमरितसरी के नज़दीक जाइज़ है और इस पर दूगना सवाब है.

(अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.११३, ५, फ़रवरी १९३७इ.)

नोट: अच्छा है! घर का माल घर ही में रहे.

सवाल: क्या इमाम की इजाज़त के बग़ैर ज़कात देना जाइज़ है?

जवाब: अकाबेरीने देवबंद के नज़दीक इमाम की इजाज़त के बग़ैर ज़कात देना जाइज़ नहीं है.

(सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.१७, यकुम रबीउल अव्वल ११७७३इ.)

नोट: यह सिर्फ़ इस लिए है कि इमाम साहब बताएं कि ज़कात की रक़म सिर्फ़ तबलीग़ व गुमराहियत पर ख़र्च की जाए. भला सोचिए! माल मेरा, नक़दी व ज़ेवरात सब मेरे, उस की ज़कात के लिए इमाम साहब की इजाज़त की क्या ज़रूरत है?

सवाल: वह कौन से मोलवी हैं जिन्हों ने मर्दों और औरतों के लिए चांदी के ज़ेवर पहेनने की इजाज़त दी है?

जवाब: नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली और इमामुल वहाबियह सनाउल्लाह अमरितसरी ने. (बदरूल अहिल्लह, स.३५६, अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.८, १५ जनवरी १९४३इ.)

सवाल: क्या ईदैन में मुआनिक़ह बिदअत है?

जवाब: जी हां! अकाबिरीने देवबंद के यहां मुआनिक़ह बिदअत है. मसलके वहाबियत के अज़ीम मुबल्लिग़ मोलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते है: ईदैन में मुआनिक़ह बिदअत है.

(फ़तावा रशीदियह, जि.२, स.९९)

सवाल: कांश्त कार लोग जो दुनयवी कारोबार के सबब रोज़ह नहीं रखते हैं उन के लिए पूछे गए हुक्म के तअल्लुक़ से इमामुल वहाबियह ने क्या कहा?

जवाब: जो बिलकुल नहीं रख सकते वह बवक़्ते फ़ुरसत रख लें.

(अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.११, १०, मई १९१२इ.)

नोट: जाहिल मोलवी और अय्याश नवाब फ़िक़्ह का मसअलह बता रहा है.

सवाल: क्या ख़त्मे कुरआन के दिन मस्जिद में रोशनी करना बिदअत है?

जवाब:शरीअते वहाबियह में बिदअत है. मोलवी रशीद अहमद गंगोही फ़तवा देते हैं कि बरोज़ ख़त्मे कुरआन शरीफ़ मस्जिद में रोशनी करना बिदअत व ना दुरुस्त है. (फ़तावा रशीदियह, स.४६०)

नोट: जिस का दिल नूरे ईमान से ख़ाली हो, बातिन सियाह हो, जिस ने सारी ज़िंदगी सियाह कारनामे अंजाम दिए हों उसे रोशनी की क्या हाजत? उसे तो सियाही चाहिए. उस के क़ब्र में भी तारीकी होगी.

सवाल:क्या मनी अर्डर करना सूद में दाख़िल है?

जवाब:फ़तावा रशीदियह के मुताबिक़ मनी अर्डर दुरुस्त नहीं जैसा हुंडी दुरुस्त नहीं, दोनों में मआमिलह सूद का है. (फ़तावा रशीदियह: २०१)

सवाल:क्या बैंक में रूपया जमअ करना सूद है?

जवाब:जी हां! फ़तावा रशीदियह में है: बैंक में रूपयह दाख़िल करना ना दुरुस्त है, ख़्वाह सूद ले या न ले. (फ़तावा रशीदियह, स.१८१)

नोट: कितने वहाबी, देवबंदी और ग़ैर मुक़ल्लिदीन हैं जो मोलवी साहब के फ़तवा पर अमल करते हैं अंदरूने ख़ानह क्या है उस की ख़बर नहीं, क़ौल व फ़ेअल में यक्सानियत नहीं, ख़ुद सऊदी हुकूमत और वहां के बाशिंदे बाहर के मुल्कों में अपनी रक़म जमअ करते हैं. और बहुत से हिंदूस्तानी वहाबी सूदी कारोबार भी करते हैं.

सवाल: क्या मुर्ग़ की कुर्बानी जाइज़ है?

जवाब:अकाबेरीने वहाबियह के यहां मुर्ग़ की कुरबानी भी जाइज़ है.

(फ़तावा सत्तारियह, स.७२, जि.२, मतबूअह क्राची)

नोट: अब इज्तेहाद कर रहे हैं ज़ाग़ व बूम भी कुरबानी के लिए जाइज़ क़रार दिए जाएं क्युं कि बकरे, गाए, बैल, भैंस महंगे हो गए हैं और कव्वा, उल्लू बग़ैर पैसे के हासिल किए जा सकते हैं.

सवाल:क्या ख़स्सी की कुरबानी नाजाइज़ है?

जवाब: मसलके वहाबियत में ख़स्सी की कुरबानी नाजाइज़ है. जो ख़स्सी की कुरबानी करे उसे वह इसलाम से ख़ारिज और सख़्त गुनह गार मानते हैं. (अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स. २ २, २ अक्तूबर १९०८ इ.)

सवाल: फ़तावा की वह कौन सी किताब है जिस में कुरआने मुक़द्दस जैसी अज़ीम किताब को बोसह देने से मनअ किया गया है?

जवाब: फ़तावा सत्तारियह, जि. १, स. १ ८ २, मतबूअह क्राची.

सवाल: मसलके वहाबियत के वह कौन से नाम निहाद इमाम हैं जिन्हों ने ख़ल्के कुरआन का क़ौल क्या है?

जवाब: इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी और मोलवी क़ाज़ी अबदुल अहद ख़ानपूरी. मोलवी सनाउल्लाह कहते हैं: कुरआन भी ख़ुदा का पैदा किया हुवा नुर मख़लूक़ है.

(फ़तावा सनाउल्लाह, जि. २, स. २ ३ ७, मतबूअह मुंबई)

. क़ाज़ी अबदुल अहद ख़ानपूरी लिखते है: कुरआन पाक मख़लूक़ है. (अल फ़ज़ीलतुल हिजाज़ियह, स. २७/ ३ २)

नोट: सय्यदना इमाम अहमद बिन हंबल (رحمۃ اللہ علیہ) ने इसी मसअले पर ख़लीफ़ए वक़्त से मुक़ाबलह किया, कोड़े खाए, जेल की सऊबतें बरदाश्त कीं मगर अपने मौक़िफ़ से न हटे. मगर वहाबी मुल्लाओं का फ़तवा है कि कुरआन मख़लूक़ व हादिस है.

सवाल: इमाम मेहदी जदीद तरीन तर्ज़ का लीडर होगा, किस का बयान है?

जवाब: मौदूदी साहब लिखते हैं कि मेरा अन्दाज़ह ये है कि आने वाला अपने ज़माने में बिल्कुल जदीद तरीन तर्ज़ का लीडर होगा. और अपने अहद के तमाम जदीदों से बढ़ कर जदीद साबित होगा. फिर मुझे यह भी उम्मीद नहीं कि अपनी जिस्मानी साख़्त में वह आम इन्सानों से बहुत कुछ मुख़्तलिफ़ होगा कि उस की अलामतों से उस को ताड़ लिया जाए न मैं यह तवक्क़ोअ रखता हूं कि वह अपने

मेहदी होने का एअलान करे गा. बलकि शायद ख़ुद भी उसे अपने मेहदी मौऊद होने की ख़बर न होगी. उस के मौत के वक़्त उस के कारनामों से दुनया को मअलूम होगा कि यही था वह ख़िलाफ़त का मिनहाजुन्नुबुव्वह पर क़ाइम करने वाला.

(तजदीद व अह्याए दीन, स.५५)

सवाल:वह कौन सा अख़्बार है जिस में बैअत की सुन्नियत से इन्कार किया गया है?

जवाब:अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स.८/१६, २३अक्तूबर १९०८इ. जब कि कुरआने करीम पारह:२६, रुकूअ ९, और हदीस शरीफ़ से बैअत का सबूत मिलता है.

सवाल:हदीसे लौलाका, लौलाका लमा ख़ल्क़तुल अफ़लाक. का इन्कार करने वाले मोलवी का नाम बताइए?

जवाब:इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी. यह कहते हैं: यह हदीस नहीं हो सकती है, किसी ख़ुश अक़ीदह ने अपने पास से मकूलह बना कर ख़ुदा की तरफ़ निस्बत करदिया है इस को इफ़्तिरा अलल्लाह कहते हैं, जो लोग इस को इस्तेअमाल करते हैं वह भी इफ़्तेरा अलल्लाह में शरीक और हिस्सह दार हैं.

(अहले हदीस अमरितसर, स.१३, १० जूलाई १९३६इ.)

सवाल:वह कौन सा सहीफ़ह है जिस में मेअराजे मुस्तफ़ा (صلی اللہ علیہ وسلم) से इन्कार किया गया है?

जवाब: सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.१५,१६ सफ़र १३८१हि. कहते हैं कि मेअराज में हुज़ूर (صلی اللہ علیہ وسلم) का अर्श पर जाना किसी हदीस शरीफ़ से साबित नहीं, जब कि कुरआने पाक की सुरए बनी इसराईल की पहली आयत मेअराज की तस्दीक़ कर रही है और सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) फ़रमाते हैं: रऐतु मर्रतैन. मैं ने अपने रब को दो बार देखा है, मगर मसलके

वहाबियत के पैरू कारों के दिलों की शक़ावत देखिए कि कुरआने पाक की सरीह आयत पढ़ कर, हदीसे मुबारक का मुक़द्दस फ़रमान देख कर आगे गुज़र जाते हैं और अपनी शोर बख़्ती से बाज़ नहीं आते.

सवाल: या मुहम्मद, या रसूलल्लाह, या अली मुश्किल कुशा, या ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, या ख़्वाजा ख़िज़्र, या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअं लिल्लाह. यह सब शिर्कियह नअरे हैं, यह किस किताब में लिखा हुवा है?

जवाब: सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स. ३, १६ जुल क़अदह १३८२हि.

सवाल: रोज़ाना सुरए यासीन शरीफ़ पढ़ कर अपने मरहूम के नाम बख़्शने के तअल्लुक़ से मसलके वहाबियत का क्या मौक़िफ़ है?

जवाब: मुहद्देसीन के नज़्दीक कुरआने मजीद पढ़ कर बख़्शना ईसाले सवाब का तरीक़ह नहीं है, हनफियह उसे जाइज़ कहते हैं.

(अख़्बारे अहले हदीस, अमरितसर, स.१३, १३ नवंबर १९३६३.)

सवाल: यारसूलल्लाह मैं शफ़ाअत चाहता हूं कहने वाला काफ़िर व मुश्रिक है, उस का ख़ून मुबाह है, यह किस किताब में लिखा हुवा है?

जवाब: तोहफ़ए वहाबियह, स.६८ में.

सवाल: क्या हालते हैज़ में तलाक़ वाक़ेअ नहीं होती है?

जवाब: शरीअते मुहम्मदियह में तो हो जाती है, अलबत्ता शरीअते वहाबियह में नहीं होती. वहाबियों के मुजद्दिद नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखते हैं: हालते हैज़ में औरत पर तलाक़ नहीं पड़ती.

(रौज़तुन्नदविय्यह, जि.२, स.४८, मतबूअह, बैरूत)

सवाल: क्या मिर्ज़ाई की इक़्तेदा में नमाज़ दुरुस्त है?

जवाब: मसलके अहले सुन्नत व जमाअत में किसि भी बद अक़ीदह की

इक़्तेदा में नमाज़ दुरुस्त नहीं है, अलबत्तह मसलके वहाबियत में दुरुस्त है. मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी लिखते हैं: मेरा मज़हब और अमल है कि हर एक कलेमह गो के पीछे इक़्तेदा जाइज़ है, चाहे वह शीअह हो या मिर्ज़ाई.

(अख़्बारे अहले हदीस अमरितसर, स. २, १२, अप्रेल, १९१५ ई.)

नोट: दौरे हाज़िर में सस्ती शोहरत के लिए इस क़िस्म की बकवास कुछ नाम निहाद मोलवी हज़रात करने लगे हैं कि हर कलेमह गो हमारा भाई है हमें उन की इक़्तेदा में नमाज़ पढ़ कर इत्तेहाद बैनल मुसलिमीन का सबूत पेश करना चाहिए और दीगर मज़ाहिब वालों के लिए अपनी मस्जिदें खुली रखनी चाहिए, गोया उन के नज़्दीक हल्वा और गोबर एक ही है.

सवाल: क्या हालते नापाकी में नमाज़ हो जाती है?

जवाब: हां! इंदल वहाबियह हो जाती है. बदरुल अहिल्लह में है: नमाज़ी नापाक बदन से नमाज़ पढ़े तो गुनह गार होगा, लेकिन उस की नमाज़ बातिल नहीं होगी. (बदरुल अहिल्लह, स. ३८)

सवाल: मसलके वहाबियत के वह कौन से पेशवा हैं जो जुनबी और हाइज़ह औरत के मस्जिद में आने का क़ौल करते हैं?

जवाब: मोलवी वहीदुज़्ज़मां लिखते हैं: जुनुबी नापाक आदमी और हाइज़ह औरत को मस्जिद में जाने की इजाज़त है, वहां ठहरना न चाहिए.

(हदियतुल मह्दी सुव्वम, स. ५७)

सवाल: किस ने हाइज़ह औरत और जुनुबी के लिए कुरआन शरीफ़ पढ़ने का क़ौल किया है?

जवाब: मुज्तहिद मसलके वहाबियत मोलवी वहीदुज़्जमां, लिखते हैं: हाइज़ह औरतों और जनाबत (नापाकी) वाले लोगों को कुरआन पढ़ना जाइज़ है. (हदियतुल मह्दी, सुव्वम, स. ५८)

सवाल: क्या सज्दए तिलावत बे वुज़ू जाइज़ व दुरुस्त है?

जवाब : हां ! वहाबियह के यहां यह फ़ेअले हराम भी जाइज़ व दुरुस्त है.

(सलातुन्नबी, स. ६६)

सवाल : जुनबी के लिए अज़ान कहना मकरूह है, यही फ़ुक़हाए अहनाफ़ का मौक़िफ़ है. उस के तअल्लुक़ से उलमाए मसलके वहावियत क्या कहते हैं ?

जवाब : बग़ैर किसी कराहत के जुनबी के लिए अज़ान कहना जाइज़ है. नवाब नूरुल हसन भोपाली लिखते है:

तरजमह: जुनुबी का अज़ान पढ़ना जाइज़ है अगरचे तहारत अफ़्ज़ल है. (उर्फ़ुल जादी फ़ार्सी, स. २४)

सवाल : जूती समेत मस्जिद में नमाज़ अदा करना जाइज़ है किस ने लिखा है ?

जवाब : नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली के लड़के नूरुल हसन भोपली ने. लिखता है: (तर्जुमह) गंदगी और नजासत से भरे हुए जूते का ज़मीन से रगड़ता उस को पाक कर देता है, यही काफ़ी है और उस में नमाज़ अदा करना और उसी से मस्जिद में दाख़िल होना जाइज़ है. (उर्फ़ुल जावा फ़ार्सी, स. १२)

वहाबी मोलवी अबदुल क़ादिर ह़िसारी ने यहां तक लिखा है कि नन्गे पावं नमाज़ पढ़ना मुशाबिहत यहुद की है.

(सहीफ़ए अहले हदीस, क्राची, स. २९, १६ जमादि अव्वल, १३८७हि.)

सवाल : क्या बग़ैर इन्ज़ाल के महेज़ दुख़ूल से ग़ुस्ल वाजिब है ?

जवाब : नहीं ! वहाबियह के यहां महेज़ दुख़ूल से ग़ुस्ल वाजिब नहीं है, इन्ज़ाल ज़रूरी है.

(अख़्बारे अहले हदीस, अमरितसर, स. १२, २७, दिसम्बर १९१२ इ.)

नोट : इमामुल वहाबियह अमरितसरि फ़तवा दे रहे हैं कि अगर कोई अपनी बिवी से मुजामिअत करे और मनी न निकले तो वह उस हालत में नमाज़ पढ़ सकता है, उस पर ग़ुस्ल वाजिब नहीं. दर

अस्ल उन की पूरी इबारत से वाज़ेह होता है कि उन का ह
मसअलह शरीअत के ख़िलाफ़ और शहवत अंगेज़ है.

मोलवी वहीदुज़्ज़मां साहब लिखते हैं: जानवर और चौपाए की पेशाब गाह में अगर कोई शख़्स अपना ज़कर डाले यअनी जानवर से वती करे तो उस पर ग़ुस्ल वाजिब नहीं.

(हदियतुल महदी, सुव्वम, स.२४, मतबूअह, देहली)

सवाल: क्या औरत मरदों की इमामत कर सकती है?

जवाब: हां! इन्दल वहाबियह औरत मर्दों की इमामत कर सकती है.

(फ़िक़्हे मुहम्मदियह, स.७६, हिस्सह अव्वल/ उर्फ़ुल जादी, स.३७)

नोट: वहाबियह औरतों! तुम्हारे मोलवियों ने कितने अजीब व ग़रीब मसाइल निकाले हैं और किताबों में छापे हैं ताकि तुम्हें लुत्फ़ अंदोज़ होने और उन्हें शहवत अंगेज़ होने के मवाक़ेअ मयस्सर आजाएं और क्युं न हो वहाबी जमाअत के हकीमुल उम्मत मोलवी अशरफ़ अली थानवी साहब फ़रमाते थे कि मज़ह मज़ी में है और बीवी बग़ल में हो तो ज़िक्र में मज़ह आता है. एक ज़र्ब इधर हो और एक ज़र्ब उधर हो ज़ाहिर सी बात है जब वहाबन इमाम होगी और उस के पीछे वहाबियों की इक़्तेदा होगी तो रुकूअ व सुजूद में ज़रूर मज़ह आएगा. सनाउल्लाह अमरितसरी ने तो ख़ुतबह देने की भी इजाज़त दे दी है.

सवाल: किस का क़ौल है कि औरत का मस्जिद में एअतेकाफ़ बैठना अफ़्ज़ल है?

जवाब: नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान का. (तर्जुमानुल क़ुरआन, स.२४४)

सवाल: क्या बे नमाज़ी काफ़िर व मुशरिक है?

जवाब: इसलाम में बे नमाज़ी सख़्त गुनह गार है मगर काफ़िर व मुशरिक नहीं, अलबत्तह मसलके वहाबियत में काफ़िर व मुशरिक है.

(सहीफ़ए अहले हदीस, स.१९, १६ मई १९५७ इ., इस्लाहे अक़ाइद, स.१०८)

सवाल:किस किताब में लिखा है कि बे नमाज़ी की नमाज़े जनाज़ह जाइज़ नहीं है?

जवाब:सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.२२, १५ जमादिस्सानी, १३७३हि. में.

सवाल:मसलके वहाबियत के किस इमाम का क़ौल है कि कुत्ते को उठा कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती है?

जवाब:मोलवी वहीदुज़्ज़मां का क़ौल है, कहते हैं: कुत्ते को उठा कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती.

(नज़लुल अब्रार , अव्वल, स.३०, मतबूअह, बनारस)

सवाल:मसलके वहाबियत के किस पेशवा का क़ौल है कि औरत मर्द के साथ खड़े हो कर नमाज़ पढ़ सकती है?

जवाब:मोलवी मुहम्मद अबूल हसन का. लिखते हैं: अगर औरत मर्दों के साथ खड़ी हो जाए तो जमहूर उलमा के नज़्दीक उस की नमाज़ भी नहीं टूटती और हनफ़ियह कहते हैं कि मर्द की नमाज़ टूट जाती है.

(फ़िक़्हे मुहम्मदियह, अव्वल, स.१५७)

सवाल:फ़तावा सत्तारियह की वह कौन सी इबारत है जिस में इस का ज़िक्र है कि अगर हालते नमाज़ में सत्र खुल जाए तो नमाज़ फ़ासिद नहीं होती है?

जवाब: हदीस में है: लैसा अला आतिक़िही शैउन. मोंढे खुल जाने से नमाज़ नहीं होती, नाफ़ का ज़िक्र नहीं है. हां अगर नाफ़ से नीचे तहबंद हो जाए तो उसे उंचा करे. (फ़तावा सत्तारियह, सुव्वम, स.११)

नोट: शरीअते मुतहहरह में नाफ़ से नीचे घुटनों तक सत्रे औरत है जिस का सत्रे औरत खुल जाए उस की नमाज़ नहीं हो सकती मगर वहाबियों के मोलवी साहब ऐसे हैं कि अगर सत्र खुल जाए तो भी उन की नमाज़ हो जाती है.

सवाल:क्या औरत अज़ान दे सकती है?

जवाब: हां! मसलके वहाबियत में औरत आज़न दे सकती है.

(बदरुल अहिल्लह, स.४७)

सवाल: क्या हालते नमाज़ में सलाम करना जाइज़ है?

जवाब: जी हां! मसलके वहाबियत में यह जाइज़ व दुरुस्त है. इमामुल वहाबियह मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी लिखते हैं: हालते नमाज़ में सलाम करना जाइज़ है. सहाबह आं हज़रत (صلى الله عليه وسلم) को सलाम करते थे, आं हज़रत (صلى الله عليه وسلم) हाथ से इशारह करते, जवाब न देने की वजह पूछने पर फ़रमाया: इन्नफ़िस्सलाति ल शुग़लन. मगर सलाम करने को मनअ नहीं फ़रमाया. (फ़तावा सनाइया, अव्वल, स.३२३)

सवाल: मसलके वहाबियत में हालते नमाज़ में सलाम का क्या तरीक़ह है?

जवाब: उसी तरह जिस तरह मुलाक़ात के वक़्त किया जाता है. नमाज़ में मुंह से जवाब देने की बजाए दायां बाज़ू लम्बा करके हाथ नीचे को करदे. (अहले हदीस अमरितसर, स.१३, यकुम जनवरी। १९३७ इ.)

नोट: उलमाए मसलके वहाबियत किस तरह हदीसे सरीह की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं. हदीसे सरीह में है कि हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) ने हालते नमाज़ में सहाबए केराम को हाथ से इशारह करने से मनअ फ़रमाया और उलमाए वहाबियह उसे जाइज़ व दुरुस्त क़रार दे रहे हैं. यक़ीनन मसलके वहाबियत का वजूद ही मुख़ालिफ़ते क़ुरआन व हदीस के लिए हुवा है.

सवाल: मसलके वहाबियत की अजीब व ग़रीब नमाज़ के तअल्लुक़ से बताइए?

जवाब: फ़िक़हे मुहम्मदियह कलां में है कि इसी तरह अगर मनी उतर कर ज़कर (आलए तनासुल) के दर्ममियान आवे और वह शख़्स नमाज़ के अन्दर हो, वह अपने ज़कर को कपड़े के ऊपर से पकड़ रखे और मनी बाहर न निकले, यहां तक कि सलाम फेरे तो उस

की नमाज़ दुरुस्त हो जाती है कि वह हमेशह पाक है यहां तक कि मनी बाहर निकले और औरत का हुक्म भी मानिन्द मर्द के है.

(फ़िक़हे मुहम्मदियह कलां, स.६९)

नोट: मसलके वहाबियत की फ़हश गोई, फ़हश कलामी, शहवत अंगेज़ी की कोई मिसाल नहीं. नमाज़ जैसी मुक़द्दस इबादत में इस तरह का हुक्म देना क्या नमाज़ की तौहीन नहीं है? शरम तुम को मगर नहीं आती

सवाल: किस का फ़तवा है कि अगर ईद और जुमअ एक ही दिन जमअ हो जाएं तो जुमअ और ज़ोहर दोनों मुआफ़ हैं?

जवाब: मसलके वहाबियत के हमेशह ख़ता पर रहने वाले अज़ीम मुज्तहिद इमाम क़ाज़ी शौकानी का. नीलुल औतार में कहते हैं: ईद व जुमअ दोनों एक दिन जमअ हों तो ख़्वाह ईद में शामिल हुवा है या कि नहीं दोनों सूरतों में जुमअ मुआफ़ है, बल्कि ज़ोहर भी मुआफ़ है. (नीलुल औतार सुव्वम, स.३४७)

सवाल: किस का क़ौल है कि फ़र्ज़ नमाज़ के बअद हाथ उठा कर दुआ मांगना साबित नहीं?

जवाब: मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी का.

(अख़बारे अहले हदिस, अमरितसर, स.२५ सितम्बर १९१३ इ.)

सवाल: किस इमाम का फ़तवा है कि ईदगाह बनाना मसनून नहीं है?

जवाब: मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी का.

(अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१३, ११/जून १९३७इ.)

सवाल: मोलवी क़ासिम नानोतवी की रिशवत ख़ोरी के तअल्लुक़ से बताइये.

जवाब: वहाबियों के हकीमुल उम्मत मोलवी अशरफ़ अली थानवी, मोलवी क़ासिम नानोतवी के तअल्लुक़ से लिखते हैं: एक साहब मुलाज़िमत के बारे में मुतरद्दीद थे. एक रोज़ देखा कि बरेली से

बतीन आरही हैं. मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब से अर्ज़ किया, फ़रमाया मिठाई खिलवावो, तो बीस के मुलाज़िम हो जाओ वर्नह ग्यारह के. उन्हों ने कहा मिठाई ख़िलवाउंगा. आप ने फ़रमाया: जाओ तुम बीस के मुलाज़िम हो गए, चुनांचे बरेली में बीस रूपयह के मुलाज़िम हो गए. (मलफ़ूज़ात हफ़्त अख़्तर, स.३९)

एक दुसरे मक़ाम पर मसलके वहाबियत के हकीमुल उम्मत कहते हैं. हज़रत मियां जी थाना भवन तशरीफ़ लाया करते थे, उन से दुआ के लिए अर्ज़ किया कि हज़रत दुआ फ़रमादें. यह मुक़द्दमह अपील में हमारे हक़ में कामयाब हो जाए, फ़रमाया कि हमारे हाजी को बैठने की तकलीफ़ है, यहां पर एक सर्वरी बनादो हम दुआ करें गे. अर्ज़ किया बहुत अच्छा, हज़रत ने दुआ फ़रमादी.

(अल इफ़ाज़ातुल यौमियह, अव्वल, स.१०७)

सवाल: बरात फुज़ूल ख़र्ची है, बरात का खाना शादी या निकाह का खाना नहीं. यह फ़तवा किस का है?

जवाब: हाफ़िज़ अबदुल्लाह रोपड़ी का. कहते हैं: बरात ज़रूरी नहीं लेकिन किसी रिवायत में मनअ नहीं, इस लिए अगर लड़के के साथ ज़रूरी आदमी लड़की को लेने के लिए चले जाएं तो कोई हर्ज नहीं, मगर अब जो रिवाज हो गया है बहुत से आदमी नामवरी के लिए जाते हैं और फुज़ूल ख़र्ची करते हैं यह जाइज़ नहीं और चूंकि दुलहन के लेने के लिए जो ज़रूरी आदमी जाते हैं वह मेहमान होते हैं, उन का खाना बहैसियत मेहमान होने उसी के ज़िम्मह है जिस के मेहमान हैं यअनी लड़की वालों के मेहमान हैं, उन्ही के ज़िम्मह उन का खाना है, उस खाने को शादी या निकाह का खाना न कहना चाहिए, यह भी एक मेहमान नवाज़ी होती है.

(फ़तावा अहले हदीस, जि.३, स.१६०)

सवाल: क्या मस्जिदों में मेहराब बनाना बिदअत है?

जवाब:हां! इन्दलवहाबियह बिदअत है. (फ़तावा सत्तारियह, जि.५, स.५६)

सवाल:किस किताब में लिखा है कि मेहराब बनाना हुनूद की इजाद है?

जवाब:सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.२१, १६ ज़िल क़अदह १३८२ हि. में. इसी तरह फ़तावह सत्तारियह पंजुम, स.५६ पर लिखा है कि बे शक मसाजिद में मेहराबे मुरव्वेजह का बनाना नाजाइज़ व बिदअत है.

सवाल:किस किताब में लिखा है कि मेहराब के गुंबद मंदिरों के बुत नज़र आते हैं?

जवाब: सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.२०, १६ ज़िल क़अदह १३८२ हि. में.

नोट: ग़ौर से इन वहाबी मुल्लाओं की इबारतें पढ़िए, बात बात पर कुफ़्र व शिर्क व बिदअत की रट लगाने वालों ने कुरआन व सुन्नत के ख़िलाफ़ किस क़दर ग़लीज़ इबारतें लिखी हैं और किस अन्दाज़ में तबलीग़ की है.

सवाल:मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी मक़ाबिर पर कुरआन ख़्वानी के तअल्लुक़ से क्या कहते हैं?

जवाब: मक़ाबिर पर कुरआन ख़्वानि नाजाइज़ है. (अख़बारे अहले हदीस, अमरितसर, स.१९, २४ अप्रेल १९३१ इ.)

सवाल:मौदूदी साहब उर्स व नियाज़ वग़ैरह के तअल्लुक़ से क्या कहते हैं?

जवाब: मुश्रेकानह, पूजा पाट की जगह फ़ातिहा, ज़ियारत, नियाज़, नज़्र, उर्स, संदल, चढ़ावे, निशान, अलम, तअज़िए और इसी क़िस्म के दूसरे मज़हबी आमाल की एक नई शरीअत तसनीफ़ कर ली गई.

(तज्दीद व अहयाए दीन, स.११)

नोट: मौदूदी साहब की यह दिल आज़ार बातें किस क़दर घटिया और मुजरिमानह हैं. सितम बालाए सितम तो यह कि गंगोही लिखते हैं

कि उर्स और मौलूद में शरीक होना दुरुस्त नहीं, यह अमल शिर्क है, ख़्वाह उस में सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ ही पढ़ा जाए.

सवाल: किस अख़्बार में मुहर्रम का खिचड़ा खाने को शिर्क क़रार दिया गया है?

जवाब: मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी के अख़्बार में अशरए मुहर्रम का खिचड़ा और शबे बरात का हलवह खाना शिर्क क़रार दिया गया है. (अख़बारे अहले हदीस, अमरितसर, स.,२, ३१, अगस्त १९४५ इ.)

सवाल: किस किताब में होली या दीवाली की खीलें और पूरीयां खाना दुरुस्त क़रार दिया गया है?

जवाब: फ़तावा रशीदियह में. (फ़तावा रशीदियह, स.१०७, जि.२)

सवाल: फ़तावा रशीदियह की वह कौन सी इबारत है जिस में सूरए फ़ातिहा और कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ कर दुआ मांगने को बिदअते सय्यिअह बताया गया है?

जवाब: सूरते मसऊलह का यह है कि फ़ातिहा मुरव्वेजह शरअन दुरुस्त नहीं है, बल्कि बिदअत सय्यिअह है.

(फ़तावा रशीदियह, जि.२, स.१४०)

सवाल: क्या बुतों के नाम पर मुश्रिक का ज़बह किया हुवा जानवर खाना जाइज़ है?

जवाब: वहाबियों के हाफ़िज़ अबदुल्लाह साहब रोपड़ी लिखते हैं, कि मुश्रिक व हिंदू वग़ैरह का ज़बह किया हुवा ग़ैरुल्लाह की तअज़ीम के लिए ज़बह किया हुवा ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़बह किया हुवा और ग़ैरुल्लाह के नाम पर उस की तअज़ीम के लिए छोड़ा हुवा यह सब जंग की सूरत में हलाल होंगे. (बकरा देवी, स.३२)

नोट: वहाबियों के नज़्दीक फ़ातिहा ख़्वानी शिर्क और बिदअत है मगर कव्वा खाना सवाब है, बिज्जू, गोह, खाना जाइज़ है. उन के यहां बुतों के नाम पर ज़बह किया हुवा जानवर खाना हलाल कैसे नहीं

हो सकता. शाबाश. शाबाश बहादुरो! ख़ूब खावो, सेहत बनाओ.

सवाल: क्या उर्स में शिर्कत गुनाह है?

जवाब: जी हां! मसलके वहाबियत में चूंकि उर्स बिदअत है इस लिए उस में शरीक होना गुनाह है.

(अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१२, २/जून १९१६इ.)

सवाल: देवबंदियों के वह कौन से मोलवी हैं जिन्हों ने मीलाद और क़याम को ख़ुराफ़ात और मुश्रिकाना अक़ाइद लिखा है?

जवाब: माहिरुल क़ादरी, लिखते हैं: महफ़िले मीलाद में सलात व सलाम के लिए खड़े हो जाना यह ख़ालिस बिदअत है और बिदअत साहिबे ईमान को गुमराही की तरफ़ ले जाती है. ईदे मीलाद बिदअत है.

(सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.१३, १६ शअबान १३८६ हि. फ़तावा अहले हदीस, जि.३, स.४५)

सवाल: उर्स में शिर्कत करना गुनाह है?

जवाब: अहले हदीस मोलवी लिखता है कि उर्स चूंकि बिदअत है, इस लिए उस में शरीक होना गुनाह है........ ग़ैरे उर्स के ज़मानह में सफ़र करके मज़ार की ज़ियारत को भी जाना दुरुस्त नहीं, उर्स का खाना, मा उहिल्ला बिही लि ग़ैरिल्लाहि में दाख़िल होने के बाइस हराम है.

(अख़बारे अहले हदीस, अमरितसर, स.१२, २/ जून, १९१६इ.)

सवाल: ग्यारह तारीख़ को अल्लाह के लिए खाना पकाने से ममानिअत किस किताब में लिखी है?

जवाब: सहीफ़ए अहले हदीस क्राची, स.२६ यकुम जमादिस्सानी १३८८ हि.)

सवाल: क्या बर्सी करना बिदअत है?

जवाब: मोलवी रशीद अहमद गंगोही के नज़्दीक ख़िलाफ़े सुन्नतं और बिदअत है. (फ़तावा रशीदियह, स.४६१)

सवाल: क्या मीलाद शरीफ़, शबे बरात और तीजा, दसवां चहलुम के

लिए खाने पीने का सामान बेचना मम्नूअ है?

जवाब:अहले हदीस मोलवी साहब से किसी ने सवाल किया कि तीजा, दसवां, चहलुम, शबे बरात, मौलूद वग़ैरह बिदआत को पूरा करने की ग़र्ज़ से अकसर लोग मैदह, सूजी, खांड वग़ैरह ख़रीदते हैं बअज़ दफ़अ उस का इल्म दुकान दार को होता है और बअज़ औक़ात नहीं होता लेकिन शबे बरात, मेअराज वग़ैरह को बग़ैर उन के बताए भी यह इल्म होता है कि यह चीज़ें उस ग़र्ज़ के लिए ख़रीदी जा रही हैं सवाल यह है कि ऐसी हालत में सौदा फ़रोख़्त करना शरअन दुरुस्त है, क्या यह बिदआत की तो मदद नहीं? जवाब देते हैं बुलूगुल मराम में हदीस है जिस में ऐसे शख़्स पर अंगूर फ़रोख़्त करने की ममानिअत आई है, जो उन से शराब बनाता था. इस से साबित होता है कि जो शख़्स बिदआत को पूरा करने की ग़र्ज़ से मीठा वग़ैरह ख़रीदे और फ़रोख़्त करने वाले को इल्म हो कि उस की ग़र्ज़ यही है. ख़्वाह बताने से इल्म हो या बग़ैर बताए तो ऐसे शख़्स पर फ़रोख़्त न करना चाहिए, ख़ुदा थोड़ी बिक्किरी में ज़्यादह बर्कत देगा. (फ़तावा अहले हदीस, स.४५, जि.३)

सवाल:क्या १२/रबीऊल अव्वल को मीलादुन्नबी बिदअत है?

जवाब:इन्दल वहाबियह माहे रबीउल अव्वल की बारह तारीख़ को जो मीलादुन्नबी होता है यह बिदअत है. (अख़बारे मुहम्मदी, देहली, स.१३, यकुम जून १९४२ इ.)

सवाल:क्या मजलिसे मीलाद बिदअत व नाजाइज़ है?

जवाब:वहाबियों के इमाम अबदुस्सतार देहलवी का फ़तवा है. मजलिसे मीलाद मुरव्वेजह बिदअत व नाजाइज़ है.

(सहीफए अहले हदीस, क्राची, स.९, यकुम रबीउल अव्वल, १३७७ हि.)

सवाल:मौदूदी साहब इमाम ग़ज़ाली (رحمة الله عليه) की तबलीग़ में नक़ाइस के हवाले से क्या कहते हैं?

जवाब : इमाम ग़ज़ाली के तज्दीदी कामों में इल्मी और फ़िक्री हैसियत से चंद नक़ाइस भी थे और वह तीन उनवानात पर तक़्सीम किए जा सकते हैं. एक क़िस्म उन नक़ाइस की जो हदीस के इल्म में कमज़ोर होने की वजह से उन के काम में पैदा हुए, दूसरी क़िस्म उन नक़ाइस की जो उन के ज़हन पर अक़लियात के ग़ल्बे की वजह से थे और तीसरी क़िस्म उन नक़ाइस की जो तसव्वुफ़ की तरफ़ ज़रूरत से ज़्यादह माइल होने की वजह से थी.

(तज्दीदे अहयाए दीन, स.४५)

सवाल : तक़लीद करना जाहिल का काम है. पीरे मुक़ल्लिद जो तक़लीद को शरअन वाजिब समझता हो वह साहिबे इल्म व साहिबे रुश्द नहीं. मुक़ल्लिद होना जाहिल का काम है. तक़लीद बिदअत है. तक़लीद सुन्नते यहूद है और तक़लीद के तरीक़ह की इब्तेदा यहूद से होती है. तक़लीदे शख़्सी शिर्क है और मुक़ल्लिदीन उस के मुर्तकिब होते हैं लिहाज़ा उन के पीछे नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए. यह सारी गुमराह कुन बातें किन किताबों में लिखी हुई हैं?

जवाब : अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१३, ११ मार्च १९३८ ई. अख़बारे अहले हदीस अमरितसर, स.१३, ३० एप्रिल १९३७ ई. अख़बारे अहले हदीस अमारितसार, स.१३, ९ अप्रेल १९३७ई. अल इरशादु इला सबीलिर्रशाद, स.८३, अल ईरशादु इला सबीलिर्रशाद, स.४१, सहीफ़ए अहले हदीस, क्राची, स.२०, यकुम सफ़र १३८४ हि..

सवाल : किस किताब में लिखा हुवा है कि वाक़िअए करबला से इसलाम मुरदह हुवा है?

जवाब : मआरिफ़े यज़ीद, स.१४ पर.

सवाल : यज़ीद की ख़िलाफ़त सय्यिदिना अली मुर्तज़ा (رضی اللہ تعالٰی عنہ) की ख़िलाफ़त से औला थी. किस किताब में लिखा हुवा है?

जवाब :ख़िलाफ़ते रशीद बिन रशीद, स. २ ३ ० पर

सवाल :हुज़ूरे अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) की क़ब्र का गिराना ही बेहतर है, काश कि लोग इस बात को समझें, यह किस किताब में लिखा हुवा है ?

जवाब :सऊदियह ने एक शरहुस्सुदूर शाए की है, उसी के सफ़हा नंबर २७ के हाशिए में यह बात लिखी हुई है.

सवाल :किस किताब में लिखा हुवा है कि नबिए अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) का कुब्बह शिर्क व इलहाद का बहुत बड़ा ज़रीअह है ?

जवाब :वहाबियों के इमाम मुहम्मद बिन अबदुल वहहाब नज्दी के पोते अबदुल रहमान नज्दी ने अपने दादा की किताबुत्तौहीद की शरह फ़तहुल मजीद में लिखी हुई है.

सवाल :यह किस इमाम का क़ौल है कि नबिए पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) के मज़ार पर कुब्बह बहुत बड़ी जिहालत है ?

जवाब :वहाबियों के बहुत बड़े इमाम मुहम्मद बिन इस्माइल यमीनी का.

(ततहीरुल एअतिक़ाद, स. २ ६)

सवाल :किस किताब में लिखा हुवा है कि क़ब्रों पर कुब्बे बनाना हराम है ?

जवाब :रद्दे बिदआत, स़.५ ६ पर(मुसन्निफ़ हाफ़िज़ अबदुल्लाह रोपड़ी)

सवाल :किस बे लगाम मोलवी ने यह कहा है कि हुज़ूर अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के रौज़ए अतहर को गिराना वाजिब है ?

जवाब :वहाबियों के नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान के बेटे नूरुल हसन भोपाली ने. (उर्फ़ुल जादी, स. ६ १)

इब्ने क़ैइम ने भी लिखा है कि क़ब्रों पर जो कुब्बे बने हुए हैं. उन को गिरादेना वाजिब है. (फ़तहुल मजीद, शरहे किताबुत्तौहीद, स. २ ० ०)

सवाल : किस कताब में लिखा हुवा है कि क़सदन व इरादतन क़ब्रे नबवी पर सलाम के लिए जाना मम्नूअ है, शरीअत ने इस क़िस्म का कोई हुक्म नहीं दिया.

जवाब:हदियतुल मुस्तफ़ीद, जि.१ स.८११. लिखते हैं क़ब्रे नबवी के पास आकर सलात व सलाम कहने या वहां नमाज़ पढ़ने या दुआ वग़ैरह करने की शरीअते इस्लामियह में कोई दलील नहीं मिलती बल्कि इस से रोका गया है.

सवाल:किस मोलवी का अक़ीदह है कि हुज़ूर (صلى الله عليه وسلم) की क़ब्रे मुबारक के नज़्दीक अपने लिए दुआ मांगना बिदअत है?

जवाब:मसलके वहाबियह के मुज्तहिद मोलवी नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली का. (नहजुल मक़बूल, स.४३, मतबूअह भोपाल)

देवबंदी वहाबियों के मोलवी मुजीबुल्लाह नदवी ने लिखा है. सहाबह व ताबईन के ज़मानह में बड़े बड़े हादेसात आए, क़हत पड़े, वबाएं फूटीं मगर एक सहाबी ने भी आं हज़रत (صلى الله عليه وسلم) की क़ब्र शरीफ़ के क़रीब न जाकर दुआ मांगी और न आप को वास्तह बनाया. (फ़ारान तोहीद नंबर, क्राची, स.१८२)

नोट: नदवी साहब न जाने किस मदरसे से फ़ारिग़ हैं उन के असातिज़ह कौन हैं शायद उन्ही की तरह रहे हों गे जिनहें सहाबए केराम के हालाते ज़िंदगी से बिलकुल वाक़िफ़ियत नहीं है. और कुतुबे मोअतबरह का मुतालअ भी नहीं वर्ना ज़हर अफ़्शानी करते हुए अकाबिर औलिया अल्लाह और मुसलमानों को मुशरिक न बनाते. ख़ुद कुरआने मजीद में अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूब जाने आलमीन (صلى الله عليه وسلم) की क़ब्रे मुबारक पर अपने गुनाहों की मआफ़ी के लिए दुआ मांगने का हुक्म दिया है और सहाबए केराम ने ऐसा किया भी है. अब हम आख़िर में अल्लामह डॉक्टर मुहम्मद अशरफ़ आसिफ़ जलाली की तसनीफ़ हल्ले मुश्किलात और सहाबह (رضى الله تعالى عنهم) से एक तवील मज़मून मिन व अन पेश करते हैं जिसे पढ़ने के बअद फ़रार की गुंजाइश ख़त्म हो जाएगी.

एक शख़्स का हज़रते उस्मान ग़नी (رضی اللہ تعالی عنہ) से काम था, वह हल नहीं होता था. ..... फ़रमाय! मैं तुम्हें नुस्ख़ा बताता हूं कि तुम वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ के यह दुआ मांगो, तुमहारा काम हो जाए गा. अगरचे उस वक़्त रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) का विसाल हो चुका था. जब उस ने उन्हीं लफ़्ज़ों के साथ दुआ मांगी. ऐ रौज़ए पाक के मकीं! मैं तुम्हें साथ ले के दुआ कर रहा हूं. तो जिस वक़्त उस ने दुआ की तो अगले लमहे दुआ को हल करदिया गया था. तो यह रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) की ज़ाहिरी हयात में भी ऐसा मौजूद रहा है और रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के विसाल के बअद भी आप को पुकारने से हाजात पूरी होती हैं और मुश्किलात भी हल होती हूई नज़र आती हैं.

बुख़ारी शरीफ़ की जिल्द दुव्वम, स.८७५ पर यह हदीस मौजूद है कि सहाबए केराम (رضی اللہ تعالی عنہم) का इतना वाज़ेह अक़ीदह था कि जिस चीज़ की निसबत रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के बदन से हो गई उस चीज़ को भी उन्हों ने अपने लिए मुश्किल कुशा समझ लिया. अल्लाह तआला के हुक्म से उन्हें भी हाजत रवा माना तो जिस के बदन से लगी हुई चीज़ मुश्किल कुशा है तो वह बनफ़्से नफ़ीस कितने बड़े मुश्किल कुशा होंगे. हज़रते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالی عنہا) जो उम्महातुल मूमनीन में से हैं. और उन का सब से आख़िर में विसाल हुवा. यह रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) की ज़ौजह मोहतरमह हैं. उन के पास चांदी की डिबियह में रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के मूए मुबारक मौजूद थे और यह सबक़ उम्मते मुस्लिमह के लिए दर्स था कि उन से तुम कभी भी हमसरी, बराबरी न करना. तुम्हारे बालों से वबा फैलती है, उन के मूए मुबारक से शिफ़ा मिलती है. उन को चांदी की डिबियह में संभाल के रखा जाता है.

हज़रते उस्मान बिन अबदुल्लाह मोहेब (رضی اللہ تعالی عنہ) कहते

हैं: मुझे मेरे घर वालों ने पानी का एक प्यालह दे कर हज़रते उम्मे सलमह के पास भेजा, क्युंकि हमारे यहां सब सहाबए केराम और ताबईन के लिहाज़ से यह दस्तूर था कि जिस शख़्स को भी नज़र लग जाती वह पानी का प्यालह ले कर हज़रत उम्मे सल्मह (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) के पास चला जाता था.

कानाा इज़ा असाबा ऐनुन औ शैऊं.

काना फ़ेअले माज़ी है और यह इस्तिमरार पर दलालत करता है.

जब भी किसी को नज़र लगती थी यह भी मुश्किल है औ शैउं या कोई मर्ज़ लग जाता था तो यह भी सहाबए केराम की मुश्किलात हैं, तो वह क्या करते थे? वह प्यालह ले कर हज़रते उम्मुल मुमिनीन उम्मे सलमह के पास चले जाते थे. उन के पास जाकर अपनी बीमारी का ज़िक्र करते थे.

देखो सहाबए केराम और ताबईन का कितना वाज़ेह अक़ीदह है. हज़रते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) ने एक बार भी किसी बेटे को झिड़की नहीं दी कि देखो तो प्याले उठाए हूए हो. अल्लाह तआला हर जगह से सुनता है. जब कोई बीमारी लग जाए तो तुम अल्लाह तआला को पुकारो. बीमारी दूर हो जाए गी. इन प्यालों में क्या पड़ा है? तुम मेरे पास क्युं आते हो? हर गिज़ किसी को झिड़की नहीं दी बल्कि हर एक के सामने इस अक़ीदे का वाज़ेह किया है कि अल्लाह तआला हर जगह से सुनता है मगर नबी (علیہ السلام) के मूए मुबारक के सदक़े में मदद और शिफ़ा जल्द मिल जाती है.

जिस वक़्त बीमार का प्यालह हज़रते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) के पास पहुंच्ता है तो हजरते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) किया करती थीं?

अख़रजत मिन शअरि रसूलिल्लाहि (صلی اللہ علیہ وسلم) व कानत तुमसिकुहू फ़ी जुल जुलिम्मिन फ़िज़्ज़तिन.

चांदी की डिबियह से मूए मुबारक निकाल कर उस को प्याले में डालतीं. फ़खज़ ख़ज़त हू. फिर बाल को उस प्याले में हरकत देतीं और फिर बाल को निकाल कर जब वह पानी मरीज़ को पिलाया जाता तो मरीज़ को फ़ौरन शिफ़ा मिल जाती थी. यह कोई तवहहुम परस्त लोग नहीं बल्कि यह हक़ परस्त लोग हैं. सहाबए केराम (رضی اللہ تعالی عنہم) और ताबईन और बिल ख़ुसूस उम्मुल मूमनीन हजरते उम्मे सलमह (رضی اللہ تعالی عنہا) जो सब कूछ अपनी निगरानी में करवा रही हैं, वह सब से बड़ी ज़िम्मेह दार हैं. उन्हों ने उम्मते मुस्लिमह को यह अक़ीदह दिया कि दुनों का मआमेलह और है और अल्लाह तआला के महबूब (علیہ السلام) का मआमेलह और है.

मूए मुबारक की तरफ़ प्याले ले कर सफ़र करना, पानी में मूए मुबारक डालना और फिर निय्यते शिफ़ा से पीना कि यह पानी पिएं गे तो बीमारी दूर हो जए गी, यह वह दीन है जो रसूले पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) ने अपने सहाबए केराम (رضی اللہ تعالی عنہم) को अता फ़रमा रखा है. मुसलिम जिल्द २, स.९०, पर यह हदीस शरीफ़ है:

हज़रते अस्मा बिंते अबी बकर (رضی اللہ تعالی عنہما) के पास रसूले पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) का एक जुब्बह था. वह कहती हैं:

हाज़िहि जुब्बतु रसूलिल्लाहि (صلی اللہ علیہ وسلم).

यह जुब्बह कोई आम जुब्बह नहीं बल्केह यह मेरे महबूब (علیہ السلام) का जुब्बह मुबारक है. कानत इंदा आईशता. यह मेरी हमशीरह हज़रते आईशह (رضی اللہ تعالی عنہا) के पास था. लम्मा कुबिज़त क़बज़्तुहा. जब उन का विसाल हो गया तो यह जुब्बह मैं ने रख लिया. फ़कानन्नबिय्यु (صلی اللہ علیہ وسلم) यलबिसुहा.

यह वह जुब्बह है जिस को हमारे नबी (علیہ السلام) पहना करते थे. अब उस की सूरते हाल क्या है? नहनु नग़सलुहा लिल्मर्ज़ा नस तश्फ़िया बिहा. हम जिस वक़्त मुश्किल में फंस्ते हैं तो क्यां करते हैं?

नहनु नग़सलुहा. हम उस जुब्बे को धोते हैं. लिल मर्ज़ा मरीज़ों के लिए. नस्तश्फ़ा बिहा. उस का पानी पीते हैं. बीमारी से शिफ़ा मिल जाती है.

यह हल्ले मुश्केलात में सहाबए केराम का अक़ीदह है. नबिए अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के जुब्बे की तरफ़ मुतवज्जह हुए लेकिन शिर्क नहीं बना और यह तवज्जोह ग़ैर की तरफ़ क़रार नहीं पाई. इस वास्ते कि जुब्बे में जो फ़ैज़ है वह बदने नबवी का है और बदने नबवी में जो कमाल है वह अल्लाह तआला का दिया हुवा है.

इस वास्ते यहां उन को मअबूद समझे बग़ैर अल्लाह तआला की मदद का मज़हर समझते हुए सरकार का बदन तो बदन रहा, कपड़े को भी जब अल्लाह की मदद का मज़हर समझ लिया उस से मदद मांगना यह आज के मुसलमान का अक़ीदह नहीं. बल्कि यह सुफ़्फ़ह वाले सहाबए केराम का भी अक़ीदह है. उन्हों ने एक दोबार नहीं बल्कि हज़रते अस्मा कहती हैं नग़सिलुहा हम उस को बार बार धोते हैं हर बार शिफ़ा मिलती है.

इस में शिफ़ा का कितना बड़ा ज़ख़ीरह है. अस्मा बिन्ते अबी बकर (رضی اللہ تعالی عنہما) का विसाल ७३ हिजरी में हुवा. रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के विसाल के बअद निस्फ़ सदी से ज़ाइद वक़्त गुज़र चुका था मगर फिर भी वह बर्कत बासी नहीं हूई और नूरी पैकर से कपड़े को जो फ़ैज़ मिला था वह ख़त्म नहीं हुवा.

वह कहते हैं हम उस को बार बार धोते हैं हर बार उस कपड़े की वही बर्कत जिस वक़्त उस को पानी लगता है.

निस्बत देखो कपड़ा बदने नबवी को लगा और पानी कपड़े को लगा और वह पानी सहाबी पी रहे हैं. बिदअती नहीं सहाबी नोश कर रहे हैं.

तवह्हुम परस्त नहीं, तौहीद परस्त सहाबए केराम वह पानी पी रहे हैं. इस निस्बत से कि इस से शिफ़ा मिलती है. हदीस में है:

हम इस जुब्बे से शिफ़ा चाहते हैं. इस के सदक़े और वसीले से शिफ़ा चाहते हैं. अब सारे उस जुब्बे का पानी पी कर फिर भी तौहीद

परस्त हैं. इस वास्ते वह समझते हैं जब कि ख़ुद कुछ नहीं कर सकता था लेकिन यह अल्लाह तआला का दिया हुवा फ़ैज़ है जो बदने नबवी में आ गया है और बदने नबवी से भी इस जुब्बे को हिस्सह मिल गया है. अब उस को जो पानी लगता है वह पानी अल्लाह के फ़ज़ल से मुश्किल कुशाई भी करता है, हाजत रवाई भी करता है. (बुख़ारी शरीफ़, २/८६५)

☆ जंगे यरमूक में हज़रते ख़ालिद बिन वलीद की टोपी गुम हो गई. आप ने बार बार टोपी की तलाश के लिए लोगों से कहा, जब वह टोपी मिली. इज़ा हिया क़लंसुवतुन जब देखा गया वह टोपी पुरानी सी थी. जिस वक़्त पुरानी टोपी को देखा तो सब ने तअज्जुब किया कि उस के बग़ैर तुम जंग पे नहीं जा रहै थे. ऐ अल्लाह तआला की तलवार क्या मआमेला था? इतनी ताख़ीर हो गई? यर्मूक में दुश्मन सामने अकड़ रहा था और आप टोपी की तलाश में थे. यह कोई इतनी क़ीमती टोपी नहीं थी या वह लोहे का ख़ोल था जो तलवार के हमले से बचा सकता हो. तो उस की तलाश क्युं थी?

हज़रते ख़ालिद बिन वलीद (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) कहते हैं:

इअतमरा रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) लोगो! इस टोपी के कपड़े को न देखो. तुम इस के ज़ाहिर को देखते हो, तुमहें क्या ख़बर इस में क्या ख़ज़ानह मौजूद है. रसूले पाक (صلی اللہ علیہ وسلم) ने उमरह किया. फ़हलक़ा रासहु आप ने अपने सर का हल्क़ किया. फ़ब्तदरन्नासु जवानिबा शअरिही. सर के दाएं बाएं के बाल लोगों ने जल्दी से ले लिए. फ़सबक़्तुहुमं इला नाहियतिही पेशानी वाले बाल मैं ने ले ली. फ़जअल्तुहा फ़ी हाज़िहिल क़लन्सुवती. वह बाल इस टोपी में मैं ने सिलाई करा लिए है. टोपी के अंदर वह बाल मौजूद हैं. अब अगला जुमलह देखो, जंग कितना मुश्किल मरहला होता है: लम अशहदु क़ितालन वहिया मई इल्ला रुज़िक़्तुन्नस्रा. आज तक जिस जंग में यह टोपी पहेन कर गया हुं तो उस की वजह से मेरी मदद की गई. अल्लाह ने उस जंग में फ़तह व नुसरत

तशरीफ़ फ़रमा हैं. सहाबी का अक़ीदह है मेरी दरख़्वास्त सरकार (صلی اللہ علیہ وسلم) सुन भी लेंगे और सुन कर मेरी मदद भी फ़रमादेंगे. जिस वक़्त उन्हों ने यह अर्ज़ की और फिर घर में जाकर सोए, ख़्वाब में रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) तशरीफ़ ले आए. फ़रमाया: अख़बिर उमर (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) अन्नहुम युसकौन.

घबराने की बात नहीं. उमरे फ़ारूक़ से कह दो बारिश का बन्दोबस्त करदिया गया है.

☆ ऐसे ही इमाम बुख़ारी ने अपनी किताबुल अदबुल मुफ़रद में इस को ज़िक्र किया है. बाबु मा यकूलुर्रजुलु इज़ा ख़रिबत रिजलुहु. जब बन्दे का पावं शल हो जाए तो उस को क्या करना चाहिए. यह बतौरे मिसाल एक मुश्किल के हल के लिए बतौरे नुस्ख़ा बयान किया: हज़रते अबदुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) ने यह नुस्ख़ा बयान किया. यह तो अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आअज़म के लख़्ते जिगर हैं. रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) के विसाल के बअद कहीं उन का पावं शल हो गया और चलने फिरने में भी मुश्किल थी. किसी ने कहा इब्ने उमर! घबराते क्युं हो? उन को पुकारो जो सब से बड़े महबूब हैं. जब हज़रते अबदुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) से यह कहा गया तो आप ने या के साथ रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) को आवाज़ दी और कहा: या मुहम्मदाह. जब या के साथ रसूले अकरम (صلی اللہ علیہ وسلم) को पुकारा तो पावं इतना जल्द ठीक हो गया, लगता था किसी ने रस्सी से बांधा हुवा था. अब उस को खोल दिया गया है. (अल अदबुल मुफ़रद, तहज़ीबुल कमाल फ़ी अस्माइर्रिजाल ११/ २०१, अमलुल यौम वल्लियह इब्ने सिती, स.७२, अल अज़कार लिन्नुवा, स.३०५, मुसन्निफ़ इब्नुल हाक स.३६९, तबक़ाते इब्ने सअद जिल्द ३, स.१०८, तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन

शौकानी, स.२४९) उन सब पर यह हदीस शरीफ़ मौजूद है और इस मक़ाम पर उदऊ के अल्फ़ाज़ से मौजूद है. फ़रमाया. उन को पुकारो जो कि सब से ज़्यादह अल्लाह तआला के महबूब हैं, इस मक़ाम पर वाज़ेह तौर पर सनद के लिहाज़ से भी बहस की गई है कि उस की सनद बिल्कुल सहीह है. इस के अलावह दीगर मुसलिम व बुख़ारी ने भी उस को बयान किया. यह हल्ले मुश्किलात के लिहाज़ से सहाबए केराम के अक़ीदे की मुख़्तसर सी झलक थी. अल्लाह तआला ने हमें भी वही अक़ीदह अता फ़रमाया है. मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इस आवाज़े हक़ को आगे पहुंचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए. आमीन.

सिराजुल क़ादरी, बहराइची

बानी व नाज़िमे आला साबरी यतीम ख़ानह, गंगवल
बाज़ार बहराइच शरीफ़, यूपी.